मदारे निजात

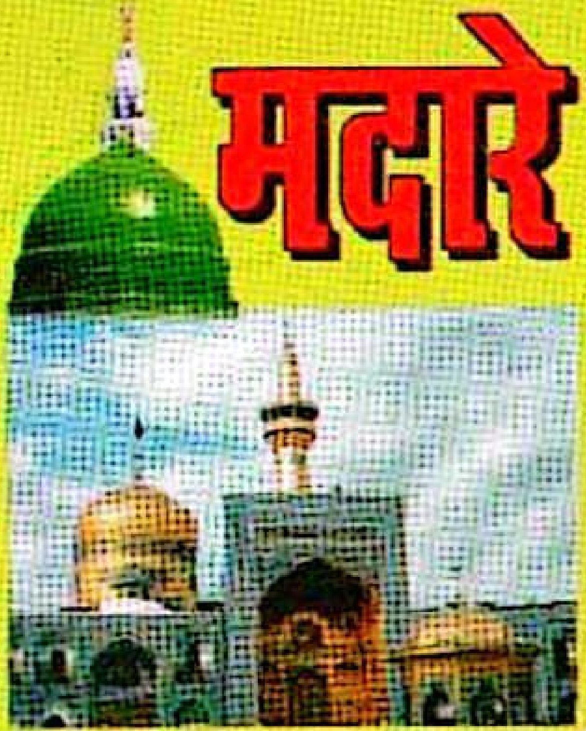

بیڑا پار

دم مدار

मजमूए कलाम

फाज़िले साउथ अफ़्रीक़ा मुफ़्ती सैय्यद शजर अली

वक़ारी मदारी

मकनपुर शरीफ़ कानपुर नगर

Www.MadaariMedia.Com

MADAARI MEDIA

دم مدار بیڑا پار

The Silsila e Aaliya Madaariya Social Platform

سلسلۂ مداریہ کے بزرگوں کی سیرت و سوانح
سلسلۂ عالیہ مداریہ سے متعلق کتابیں
سلسلۂ مداریہ کے علماء کے مضامین تحریرات
سلسلۂ مداریہ کے شعراء اکرام کے کلام

حاصل کرنے کے لئے اس ویب سائیٹ پر جائیے

www.MadaariMedia.com

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

@MadaariMedia

Authority : Ghulam Farid Haidari Madaari

www.madareazam.com
E-mail : syedshajarmadari@gmail.com

क़ीमत 30/-

दम मदार ۷۸۶/۹۲ **बेड़ा पार**

मदारे निजात

शजर मदारी मकनपुरी

इन्तेसाब

अपने वालिदो उस्ताद सैय्यद महज़र
मदारी मकनपुरी
के नाम जिन्होंने आशिकी व नियाज़ो अदीब
का शायराना फ़ैज़ पहुँचाकर मुझ ज़र्रे में
भी अदबी रोशनी पैदा कर दी।
"शजर मकनपुरी"

शाने बिलाली

किसे मिली है बलन्दी ऐसी किसे मिला है कमाल ऐसा
जमाले युसुफ भी हैरती है, है मुस्तफा का जमाल ऐसा
चमक रहा है फ़लक पे सूरज तुम्हारे तल्वों की रोशनी से
हो जैसे नाखुन का वो तराशा, है आस्माँ पर हिलाल ऐसा
कहें ये आक़ा के आओ तैबा कहें ये जब हम बुलाओं तैबा
जवाब हो तो जवाब ऐसा सवाल हो तो सवाल ऐसा
के जिसके होते हुए भी तैबा ना देख पाऊँ अय मेरे मालिक
ना चाहिये मुझको ऐसी सरवत ना चाहिये मुझको माल ऐसा
हमारे रुख़ के तिलों के ख़ातिर तुम अपने रुख़ की सियाही दे दो
बरोज़े महशर जिनाँ की हूरें कहेंगी तुमसे बिलाल ऐसा
मदीने के सुब्हो शाम देखूँ है ये तमन्ना मगर करूँ क्या
सफ़र के मफ़्कूद रास्ते हैं बिछाया गर्दिश ने जाल ऐसा
खुशी दे जो कोई ग़म के बदले जो दे दोआएं सितम के बदले
सिवाए आक़ा के सारी दुनियाँ में कौन है खुश ख़िसाल ऐसा

इसी लिये करबला की धरती पे जुल्म शब्बीर ने सहें हैं
किसी पे फिर हों न जुल्म ऐसे किसी का फिर हो न हाल ऐसा
शजर बनेगा मेरा मुकद्दर नबी का वो रोज़ए मुनव्वर
कभी तो चमकेगी मेरी किस्मत कभी तो आएगा साल ऐसा

मन्ज़रे तैबा

वुजूदे खाकि में नूरी समन्दर डूब जाते है
तुम्हारे इश्क़ में आका हम अक्सर डूब जाते है
नबी के नाम लेवा दौड़ते फिरते हैं दरिया पर
जो हैं अज़्मत के मुनकिर मिस्ले पत्थर डूब जाते हैं
जमाले यूसुफी कुरबाँ तेरे जल्वों में अय आका
बिलालो ज़ैद और सलमानों बूज़र डूब जाते हैं
ज़रा उम्मी लक़ब के इल्म की रिफअत कोई देखे
के इनके इल्म के क़तरों में सागर डूब जाते हैं
डुबाना चाहते है जो तेरी अज़मत की कश्ती को
यकीनन बहरे जुल्मत में वो यक्सर डूब जाते हैं

उभरता है फलक पर उस घड़ी ईमान का सूरज
जो बहरे जुल्म में शब्बीरो शब्बर डूब जाते हैं
दरे खैरुलवरा पर जब रसाई हो नहीं पाती
तो ग़म में मुफ्लिसों नादारो बेज़र डूब जाते है
शजर वो डूब सकते ही नहीं हुस्ने मनाज़िर में
के जिनकी आँखों में तैबा के मन्ज़र डूब जाते हैं।

मोहम्मदुन नबीयोना

मोहम्मदुन नबीयोना मोहम्मदुन नबीयोना
मोहम्मदुन नबीयोना मोहम्मदुन नबीयोना
हबीबोना तबीबोना गयासोना मुग़ीसोना
रहीमोना करीमोना अयानोना मोईनोना
बशीरोना नज़ीरोना सिराजोना मुनीरोना
अमीरोना अमीनोना मोहम्मदुन नबीयोना
तुम्हीं से या नबी हमें शऊरे बन्दगी मिला
सलीकएहयात भी तुम्हीं से या नबी मिला

सहाबिये नबी मिले हसन मिले अली मिले
मिले शहीदे करबला मोहम्मदुन नबीयोना
तुम्हारा जो गुलाम है उसे किसी का डर नहीं
न उसको फ़िक्रे कब्र है और हश्र का खतर नहीं
घड़ी जब ऐसी आएगी हमारे सर पे छाएगी
तुम्हारे फ़ज़्ल की रिदा मोहम्मदुन नबीयोना
तेरा दयार हो नसीब अब तो सय्यदुल बशर
हमारी सम्त भी उठे इनायतों की इक नज़र
दुखी हूँ प्यार चाहिये तेरा दयार चाहिये
कुबूल हो ये इल्तजा मोहम्मदुन नबीयोना
तुम्हारी अज़मतें भला करें तो कैसे हम बयाँ
हैं हम ज़मी की पसतियाँ हो तुम बलन्द आस्माँ
तुम्हारे वास्ते शहा बनी ज़मी बने ज़माँ हो तुम
हबीबे किबरिया मोहम्मदुन नबीयोना
हर एक शै पे दे दिया खुदा ने इख़्तियार है
क़रार तुमसे माँग ले जो कोई बेक़रार है
हर एक हादसा टला तुम्हीं से आसरा मिला

जो मुश्किलों में दी सदा मोहम्मदुन नबीयोना
नबी तु ही करीम है रऊफ़ है रहीम है
बहारे कल्बों जाँ है जिससे तू वही शमीम है
दुखो से जो निकाल दे बलाएं सर से टल दे
वो कौन है तेरे सिवा मोहम्मदुन नबीयोना
तुम्हीं हो फ़ख़्रे अम्बिया तुम्हीं हबीबे किब्रिया
तुम्हीं शफीये दोसरा हो बेकसों के आसरा
हो तुम दिलों का मुददआ हो राहे हक़ के रहनुमा
हो तुम हमारे पेशवा मोहम्मदुन नबीयोना
करीमो अकरमुल बशर हसीनों अहसनुल कमर
अना गुलामों का शजर दोआई मिन्का मुख्तसर
इज़ा तज़ीयो साअतुन बेका तजीयों रहमतुन
फतुग्फेरो जुनूबना मोहम्मदुन नबीयोना
कभी तो ज़ालिमों के जुल्म का जवाब आएगा
यक़ी है मुझको अय शजर के इन्कलाब आएगा
अभी तो मेंहदी आएगें पयामे अम्न लाएगें
हर एक देगा ये सदा मोहम्मदुन नबीयोना

क़ल्बे शजर

आएगा बुलावा मेरा सरकार के दर से

देखेगें नबी मुझको भी रहमत की नज़र से
आएगा बुलावा मेरा सरकार के दर से
एक उम्र जो तैबा की जुदाई में जला है
कैसे भला जल जाएगा वो नारे सक़र से
रब चाहे जिसे उसको ही मिलती है ये नेअमत
इश्के नबी मिलता नहीं है दौलतो ज़र से
चलना ही अगर है तो चलो जनिबे तैबा
कोई सफ़र अच्छा नहीं तैबा के सफ़र से
उश्शाके नबी ने वहाँ सजदे है लुटाए
गुज़रे मेरे सरकार है जिस राहगुज़र से
दीवानगिये इश्के नबी का है तक़ाज़ा

पहुँचे जो कभी लौटे ना वां तैबा नगर से
सरकार के घर से ही हमें दीन मिला है
ये दीन बचा भी है तो सरकार के घर से
क्यूँ आठोंपहर यादे नबी में है तड़पता
ये सोरिशे ग़म पूछे कोई क़ल्बे शजर से

आमेना के घर आया

झूम उठे महो अख्तर आमेना के घर आया
जब खुदा का पैगम्बर आमेना के घर आया
फिक्र क्यूँ करें आसी हश्र में शफाअत की
आज शाफए महशर आमेना के घर आया
जिसके इक इशारे पर चाँद होगा दो टुकड़े
इख़तियारे कुल लेकर आमेना के घर आया
खत्म क्यूँ न हो जाए गुमरही ज़माने से
कायनात का रहबर आमेना के घर आया

औलिया हो यामोमिन अम्बिया फरिश्ते हों
जो सभी से हे बेहतर आमेना के घर आया
अब तलक जो पोशीदा था पनाहे वहदत में
ओढ़े नूर की चादर आमेना के घर आया
जो हबीब रब का है जो तबीब सबका है
जो है मालिके कौसर आमेना के घर आया
अय जहाँ के सुल्तानों झुक के सब सलामी दो
कायनात का सरवर आमेना के घर आया
अय शजर तशददुद का राज मिटने वाला है
रहमो अम्न का पैकर आमेना के घर आया

अल मदीना

अल मदीना अल मदीना अल मदीना अल मदीना
खुल्द का लोगों है ज़ीना अल मदीना अल मदीना
रहमतों का है ख़ज़ीना अल मदीना अल मदीना
साकिये कौसर कहाँ है बाइसे ज़मज़म कहाँ

हैं छलकते जामे इश्के सरवरे आलम कहाँ
कह उठा हर जामों मीना अल मदीना अल मदीना
मस्दरे जूदो सख़ा है मम्बए फैज़ों करम
मख़्ज़ने नूरे खुदा हे मरकज़े नाज़े इरम
रहमतों का है ख़ज़ीना अल मदीना अल मदीना
अपना नूरी दर दिखाएगें हमें मुख्तारे कुल
इस बरस देखों बुलाएगें हमें मुख्तारे कुल
आ गया हज का महीना अल मदीना अल मदीना
बस सिवाए इश्के सरकारे दो आलम कुछ न हो
और इसमें जुज़ ग़मे सरकार के ग़म कुछ न हो
काश बन जाए ये सीना अल मदीना अल मदीना
किस के ज़र्रे की चमक करती है फीका तेरा रंग
किस ज़मीं के तुझसे भी नायाब है ज़र्राते संग
कह उठा हर एक नगीना अल मदीना अल मदीना

★★★★★★★

बाज़ारे मिस्र

जल्वए नूरे मोहम्मद मरकज़े अन्वार से
हुस्न आलम को मिला है अहमदे मुख़्तार से
दिन हुआ रोशन तुम्हारे रुए पुर अन्वार से
रात ने पाई सियाही गेसुए ख़मदार से
कोई तेरे हुस्न की क़ीमत लगा सकता नहीं
ये सदाएँ आ रही हैं मिस्र के बाजार से
किस क़दर भारी है एक इक पल नबी के हिज्र का
ये कसक ये दर्द पूछो इस दिले नादार से
मिल गया किस्मत से है तुमको दरे ख़ैरुलवरा
जो भी चाहों माँग लो कोनैन के मुख़्तार से
ग़ौसो ख़्वाजा हो मोईनुददीं हों या हों बायज़ीद
भीख पाता हर वली है आपके दरबार से
उनके कदमों तक पहुँचने की ज़रा कोशिश तो कर
अपने सीने से लगा लेगें वो बढ़कर प्यार से

मरहबा सद मरहबा अय पैकरे खुल्क़े अज़ीम
तूने दुनियाँ को बदल डाला हंसी किरदार से
आप हैं नूरे मुजस्सम आप हैं नूरे ख़ुदा
दो जहाँ रोशन हुए है आपके अन्वार से
तेरे किरदारो अमल पे नाज़ ये दुनियाँ करे
अय शजर है खून का रिश्ता तेरा सरकार से

महशर के दिन

जब परीशाँ हों नबी के उम्मती महशर के दिन
थाम लें बढ़ कर वो दामाने नबी महशर के दिन
रब बनाएगा उन्हीं को जन्नती महशर के दिन
जो भी हैं सच्चे गुलामाने नबी महशर के दिन
जिसमें शामिल हो न हुब्बे अहमदी महशर के दिन
काम आ सकती नहीं वो बन्दगी महशर के दिन
ये बेलालों जैदो सलमानों अनस से पूछिये
कितनी काम आई नबी की चाकरी महशर के दिन
अब्रे रहमत बनके गेसूए मुहम्मद छा गए

धूप की शिददृत जो हद से बढ़ गई महशर के दिन
आबे कौसर जो पिलाऐगें नबी के इज़्न से
हैं उमर सिद्दीक़ो उस्मानो अली महशर के दिन
हों वो इब्राहीमो इस्माईलो मूसा या के नूह
आसरा तुमसे लगाए है सभी महशर के दिन
पुरसिशे आमाल से डरता है क्यूँ तू अय शजर
काफी है बख़शिश को एक नाते नबी महशर के दिन

मदीना जहाँ है

वहाँ ज़र्रा ज़र्रा महो कहकशाँ है मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है
वहीं सरनिगूँ रिफ़अते आस्माँ है मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है
अबूबकरो उस्मानो फ़ारुको बूज़र अली फात्मा और शब्बीरो शब्बर
बताऊँ के इन सब का मरकज़ कहाँ है मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है
वहाँ से हुई दूर है बेज़बानी वहाँ उतरा है मसहफे आस्मानी
वहीं से मिली बे ज़बाँ को ज़बाँ है मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है
वहीं पे तो है शाफ़ए रोज़े महशर वहीं पर तो है मालिके हौज़े कौसर
वहीं हश्र की धूप का साएबाँ हैं मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है

इलाजे जिगर की ज़रुरत नहीं है मुझे चारागर की ज़रुरत नहीं है
मेरे हर मरज़ की दवा तो वहाँ है मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है
दरे सरवरे दीं पे उफ़ भी न करना अय जाएर अदब उनका मल्हूज़ रखना
वहाँ हर कदम इश्क का इमतिहाँ है मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है
अजब हुज्रए आएशा का है मन्ज़र है जल्वा गहे अहले बैते पयम्बर
वहाँ अपना घर याद आता कहाँ है मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है
नज़ारे सितारे ये बर्गो शजर भी ज़िया लेने आते है शम्सो क़मर भी
वहाँ मरकज़े हुस्ने हर गुलिस्ताँ है मदीना जहाँ है मदीना जहाँ है

रहमतुल लिल आलमीं

और अपने पास क्या है रहमतुल लिल आलमीं
बस तुम्हारा आसरा है रहमतुल लिल आलमीं
धूप शिददत की क़यामत की तपिश महशर का दिन
आपकी सर पर रिदा है रहमतुल लिल आलमीं
मरकज़े अहले वफा है रहमतुल लिल आलमीं
आपका जो नक्शे पा है रहमतुल लिल आलमीं
हो ज़ियारत आपके दरबार की मुझको नसीब
मेरे लब पे ये दुआ है रहमतुल लिल आलमीं

रहमते हक़ ने लिया बढ़ के उसे आग़ोश में
प्यार से जिसने कहा है रहमतुल लिल आलमीं
हैं फरिश्ते उस पे नाज़ाँ रहमते उस पर निसार
जिसने दिल पर लिख लिया है रहमतुल लिल आलमीं
और कुछ मुझको दो आलम में नज़र आता नहीं
बस शजर का मुददआ है रहमतुल लिल आलमीं

हक़ अल्लाहो हक़ अल्लाह

मेरे नबी का है मुखड़ा चाँद भी जिस पर है शैदा नूरे मुजस्सम
सल्ले अला हक़ अल्लाहो हक़ अल्लाह
आपका तैबा मिस्ले जिनाँ और पसीना मुश्को हिना
चाँद से भी रौशन तलवा हक़ अल्लाहो हक़ अल्लाह
कुफ्र का हर सू गल्बा था आए जब महबूबे खुदा
सारे जहाँ में गूँज उठा हक अल्लाहो हक अल्लाह
है दुनियाँ पुर नूर हुई जुल्मत सब काफूर हुई चाँद हिरा का
जब चमका हक़ अल्लाहो हक़ अल्लाह
सेहने काबा के अन्दर छाई फ़ज़ा है ईमाँ की
आया मदद करने को है चाचा एक भतीजे की
जुल्म न कर पाएगें अब मक्के के ज़ालिम जाबिर
बोल उठे हैं अब हमज़ा हक अल्लाहो हक अल्लाह

चाँद के दो टुकड़े है किये सूरज को पलटाया है
आस्मान की सैर है की पेड़ को पास बुलाया है
जब है नबी का ये रुत्बा इनका खुदा कैसा होगा
बोल उठा हर एक बन्दा हक अल्लाहो हक अल्लाह
आप वकारे दीने मुबीं आपसा आक़ा कोई नहीं
आपके ही हैं ज़ेरे नगीं चाहे फ़लक हो चाहे ज़मी
आपसे दुनियाँ रोशन है आप की रहमत सावन है
आपके गेसू काली घटा हक अल्लाहो हक अल्लाह
कहने लगा बुजेहल के हम काबे में तो जाते हैं
बुतखाने में मेरे भला आप ना क्यूँ कर आतें हैं
अपने कुदूमें पाक को जब बुतखाने में है रक्खा
बोल उठे सब झूठे खुदा हक अल्लाहो हक अल्लाह
अर्श पे जिसका अहमद है फ़र्श पे नाम मोहम्मद है
नूरी नूरी मरकद है सब्ज़ वो जिसका गुम्बद है
दोनों जहाँ की रहमत है हर मुफलिस की दौलत है
नूरे खुदा है शमए हेरा हक़ अल्लाहो हक़ अल्लाह
जिसमें न उनकी उल्फ़त हो वो तो यक़ीनन दिल ही नहीं
जिसमें न उनका सौदा हो दिल वो किसी क़ाबिल ही नही
जो भी नबी का दुश्मन है वो ईमाँ का रहज़न है
वो शैताँ का है बच्चा हक अल्लाहो हक अल्लाह
पहले मुसलमानों पर वो जुल्मो तशददुद करते थे
शहरे रब में रहकर भी बुत की इबादत करते थे

अहले कुफ्र को मक्के से भागने का रास्ता न मिला
चारों तरफ जब गूंज उठा हक़ अल्लाहो हक़ अल्लाह
प्यासी हैं मेरी आँखें उनकी ज़ियारत को मौला
हम को शजर दिखलाएंगे कब्र में वह नूरी चेहरा
आँखों को अय मेरे खुदा ताबे ज़ियारत दे देना
सामने जब आए आक़ा हक़ अल्लाहो हक़ अल्लाह

मदीने जाने वाले

मदीने जाने वाले मदीने जाने वाले
लुटा कर इश्क़ के सजदे जबीं चमकाने वाले
सुनहरी जालियो से नूर की किरनें बिखरती हैं
जो रोशन ज़ायरे सरकार की आखों को करती हैं
बसा कर लेते आना वो मन्ज़र जाने वाले
मदीने जाने वाले मदीने जाने वाले
बुलाया है रसूले पाक ने क्या रोक ले कोई
है किसमें ताब इतनी इनका रस्ता रोक ले कोई
मसाएब से दुनियाँ की नहीं घबराने वाले
मदीने जाने वाले मदीने जाने वाले

बड़ा एहसान है सरकार का सारे ज़माने पर
शिफ़ा पाता है हर बीमार उनके आस्ताने पर
बड़े किस्मत वाले हैं वो चौखट पाने वाले
मदीने जाने वाले मदीने जाने वाले
करम की एक नज़र सरकार डालेगें कभी तुझ पर
किसी दिन जमके बरसेगी घटा रहमत भरी तुझ पर
अय इश्के सरवरे दीं में सदफ़ बरसाने वाले
मदीने जाने वाले मदीने जाने वाले
तुम्हारे इश्क का सरकार है बीमार कह देना
शजर की इल्तजा भी ज़ायरे सरकार कह देना
बुला लें मुझको भी वो करम फरमाने वाले
मदीने जाने वाले मदीने जाने वाले

या मुस्तफ़ा

जब भी दिले रन्जूर ने दी है सदा या मुस्तफा
बरसी तुम्हारे फैज़ की मुझ पर घटा या मुस्तफा
होगा चमन हददे नज़र खुल जाएगा जन्नत का दर
महशर में जब देखेगें हम जल्वा तेरा या मुस्तफा

तुम नूर बनके आए जब दुनियाँ ने पहचाना है तब
वरना खुदा का नूर भी एक राज़ था या मुस्तफा
इम्दाद उसको मिल गई उसकी खिली दिल की कली
रंजो ग़मों आलाम में जिसने कहा या मुस्तफा
तू रब का ऐसा नूर है है माँद जिसके सामने
हर इक किरन हर एक चमक हर एक ज़िया या मुस्तफा
जो मुश्किलें आसाँ करे क़ल्बे हजी शादाँ करे
दुनियाँ में कोई भी नहीं तेरे सिवा या मुस्तफा
पत्थर बना रश्के गोहर फूला फला हे वो शजर
तेरे वसीले से है की जिसने दोआ या मुस्तफा

मये ज़िन्दगी

वो खुमारे इश्के रसूल हो मिले खुद को अपना पता नहीं
मअे जिन्दगी है वो बे मज़ा तेरा इश्क जिसमें घुला नहीं
तेरा दर्द रश्के निशात है तेरा ग़म ही वज्हे सुकून है
मै मरीज़े इश्के रसूल हूँ मेरे दर्द दिल की दवा नही

ना मेरी ज़मी है न आस्माँ मुझे खुद गरज़ सा लगे जहाँ
मुझे अब मिलेगी कहाँ अमाँ मेरा कोई तेरे सिवा नही
तेरा ज़िक्र हासिले जिन्दगी तेरी फिक्र में है मेरी खुशी
है तेरे दयार की जुस्तजू कोई ग़म है इसके सिवा नहीं
मेरी धड़कनों से हो बाख़बर मेरे हाले दिल पे भी है नज़र
मेरी सम्त चश्मे करम उठे मेरा हाल तुम से छिपा नहीं
क्या नही खबर है ये आसियों नहीं कोई साया है हश्र में
वो जलेगा हश्र की धूप में तेरी सर पे जिसके रिदा नहीं

मेरे नबी

हर एक शहर हर गली चमन चमन कली कली
पुकारते हैं हम सभी मेरे नबी मेरे नबी
है कौन वज्हे कुनफ़काँ है कौन रश्के इन्सो जाँ
है किसकी सब पे सल्तनत मकीं हो या हो लामकाँ
हबीब रब का कौन है तबीब सबका कौन है
पुकार उठा ये हर कोई मेरे नबी मेरे नबी

बड़ा ही खुश खिसाल है बड़ा ही बा कमाल है
नबी का जो बिलाल है वो दीन का हिलाल है
मिलें है उसको ग़म बहुत हुई है आँख नम बहुत
मगर ज़बाँ पे था यही मेरे नबी मेरे नबी
न जुस्तजू दफ़ीने की न है तलब खजीने की
मेरे खुदा है आरज़ू मुझे फ़क़त मदीने की
मदीना पहुँचू जिस घड़ी हो सामने दरे नबी
तो लब पे आए बस यही मेरे नबी मेरे नबी
हर उम्मती की जान हो हर एक बशर की शान हो
तुम्ही हो वज्हे कुन फ़काँ तुम्ही निगेहबान हो
तुम्ही हो अर्श का सुकूँ खुदा के मेहमान हो
है जिब्रईल हैरती मेरे नबी मेरे नबी
जलेगा हर मकाँ मकीं तपेगी धूप से ज़मी
शदीद होगी धूप की तपिश मगर है ये यकीं
घटा वो बनके आऐगें वहीं मेरी बुझाऐगें
बरोज़े हश्र तश्नगी मेरे नबी मेरे नबी
न पूछ मुझसे क्या हूँ मै गुलामे मुस्तफा हूँ मैं
नबी का हूँ गदाए दर तो सब का मुददआ हूँ मैं
गुलामिये नबी मिली नबी की चाकरी मिली
अबस है अब शहिन्शही मेरे नबी मेरे नबी

नबी की जलवा गाह में रसूल की पनाह में
चला है आशिके नबी मदीना तेरी राह में
नहीं है कज कुलाह में बसा है बस निगाह में
दरे रसूले हाशमी मेरे नबी मेरे नबी
अँधेरी क़ब्र में शजर लगा जो तीरगी से डर
थी जा बहोत वो पुरख़तर करम ये हो गया मगर
वो नूर बनके आ गये लहद को जगमगा गये
फ़ना हुई है तीरगी मेरे नबी मेरे नबी

ठन्डी हवा

सभी आसियों का वही आसरा है
जो महबूबे हक है रसूले खुदा है
मोहम्मद का रुत्बा जहाँ में सिवा है
कोई उनके जैसा नहीं दूसरा है
बढ़ी और भी आतिशे इश्के अहमद
मदीने से आई जो ठन्डी हवा है
करम कीजिये नाखुदाए मदीना
के तूफान में मेरा बेड़ा फंसा है

बुलाएगें कब रहमते हर दो आलम
ये ज़ाएर से दीवाना दिल पूछता है
तेरे नूर से चाँद सूरज है रौशन
सितारों में बाकी तुझी से ज़िया है
ज़माने की गर्दिश न इससे उलझ तू
शजर तो मोहम्मद के दर का गदा है

नूरी तलवा

हुज़ूरी की हर दम दोआ माँगते है इन आँखों में आँसू मचलते मचते
दयारे मदीना से हम दूर रहकर कहाँ तक रहेगें तड़पते तड़पते
तेरी ज़ुल्फ़ का मोअज़िज़ा है ये आका दो आलम रहेगें महकते महकते
ज़िया चाँद तारों को देता रहेगा तेरा नूरी तल्वा चमकते चमकते
हर एक आँख नम थी हर एक दिल में ग़म था मदीने में था एक कोहराम बरपा
सुनी अहले तैबा ने बादे नबी जब अज़ाने बिलाली बिलखते बिलखते
यही आरज़ू है यही है तमन्ना बस एक बार मैं देख लू तेरा रौज़ा
बुला लो मदीने में अय मेरे आक़ा हुई एक मुददत तड़पते तड़पते
करुँ मदह तेरी क्या औकात मेरी कहाँ नाते सरवर कहाँ जात मेरी
तेरा ही वुफ़ूरे करम है ये आका संभलता रहा हूँ बहकते बहकते
अकेला शजर ही नहीं मदहख़्वाँ है नबी का तो मददाह सारा जहाँ है
हैं गाते परिन्दें भी नग्में नबी के हर एक सुब्ह उठकर चहकते चहकते

एहसासे नदामत

फरिश्ते यूँ इबादत कर रहे हैं
तेरे दर की जियारत कर रहे हैं
अदा आक़ा की सुन्नत कर रहें है
अली से हम मोहब्बत कर रहें हैं
सितारो आओ बढ़के दो गवाही
वो ऐलाने नबुव्वत कर रहें है
वो सिदरा से भी आगे जा चुके हैं
खड़े जिबरील हैरत कर रहे है
सरों पे जैसे बैठे हों परिन्दे
सहाबा यूँ समाअत कर रहें हैं
मदीने वालों तुमको हो मुबारक
मेरे सरकार हिजरत कर रहें है
सितारे चाँद गर्दिश आस्माँ पर
तुम्हारी ही बदौलत कर रहें है
तुम्हारे ख़ून की निस्बत के सदके
बशर सब मेरी इज्ज़त कर रहे है

हरम से अर्शे आज़म तक की पूरी
वो पल में तै मसाफ़त कर रहें हैं
बुलाकर सरवरे आलम मदीने
शजर की पूरी हसरत कर रहे हैं

नूरे मुजस्सम

मेरे आका करम फ़रमाइयेगा
मदीना हमको भी बुलवाइयेगा
कभी सर पर मेरे जो आए मुश्किल
मदद के वास्ते आ जाइयेगा
यकीनन आएगें नूरे मुजस्सम
न हरगिज़ कब्र में घबराइयेगा
हो दिल तैबा की फुरकत से परीशाँ
नबी की नात से बहलाइयेगा
है खाली दिल की बस्ती रहमते कुल
हमारे सीने में बस जाइयेगा
जो बरसें आपकी फुरक़त में आँखें
हुजूर अब्रे करम बरसाइयेगा
नज़र में सीरते सरकार रख के
मसाइल जीस्त के सुलझाइयेगा

लिबासे रहबरी पहनें है रहजन
शजर हरगिज़ न धोका खाइयेगा

फ़िदा का या रसूलल्लाह

फ़िदाका या रसूलल्लाह फ़िदाका या रसूलल्लाह
जमाले रुए अन्वर से हैं ये आँखे मेरी रौशन
पसीना तेरा महकाए हुए है दिल का ये गुलशन
बसा इस दिल में बस तू है कि साँसों में तेरी बू है
है ज़ेहनों में तेरा नक्शा फ़िदाका या रसूलल्लाह
अबू अय्यूब अन्सारी अनस सलमानों बू मूसा
अबू अस्वद बेलालो ज़ैदो हस्सानो अबू तल्हा
वो सिददीको उमर हैदर वो जुन्नूरैन और बूज़र
सहाबा का हर बच्चा फ़िदाका या रसूलल्लाह
सुहानी रात में ये जो सितारे जगमगाते है
उतरती चाँदनी है और जुगनू टिमटिमाते हैं
ये भवँरे गीत गाते हैं ये गुल जो मुस्कुराते है
तुम्हारे ही लिये आका फ़िदाका या रसूलल्लाह
तमन्नाए दिली मेरी जो बर आए तो क्या कहना
तुम्हारे आस्ताँ की दीद हो जाए तो क्या कहना

है आँखो में तेरा रौज़ा मगर मजबूर हूँ आका
बुला लीजे मुझे तैबा फ़िदाका या रसूलल्लाह
सजाए ख़्वाब आखों में बसाए दिल में ग़म तेरा
हूँ बैठा राहे तैबा पर के कब होगा करम तेरा
बुलावा आएगा कब तक शजर मुस्काएगा कब तक
तेरा दीदार कब होगा फ़िदाका या रसूलल्लाह

जन्नत का मज़ा

शाफ़ए हश्र के दामन की हवा मिल जाए
हम गुलामों को भी जन्नत का मज़ा मिल जाए
लहलहा उट्ठे मेरे आका मेरी किश्ते हयात
आपकी ज़ुल्फ की जो काली घटा मिल जाए
फिर उसे ख़ौफ हो महशर का न फ़िक्रे दोज़ख़
आप मिल जाएँ जिसे उसको खुदा मिल जाए
मेरे माथे को सजाने के लिये ले आना
उनके ज़ायर जो तुझे ख़ाके शिफा मिल जाए
जो है दीवाना शहे करबोबला का लोगों
हो नहीं सकता उसे कोई बला मिल जाए
मुझ गुनहगार को तैबा में असीरी दे दो
मेरे जुर्मों की मेरे आक़ा सज़ा मिल जाए

क्या अजब है के तुझे चाँद पे जाने वाले
मेरे सरकार का नक्शे कफ़े पा मिल जाए
देख ले जो भी अक़ीदत से मदारी रौज़न
अय शजर उसको मदीने का पता मिल जाए

या अइयोहन्नबी

या अइयोहन्नबी या अइयोहन्नबी
मुज़्ज़म्मिलो मुददस्सिरो यासीन वल क़रशी
मुज़्ज़क्किरो मोहम्मदो महमूद वल मक्की
नूरुन व अब्तही या अइयो हन्नबी
तुम बाइसे तकमिले दीं ख़त्मे रुसुल तुम हो
हो मन्जिले राहे हुदा नूरे सुबुल तुम हो
तुमसे है रौशनी या अइयोहन्नबी
अय शाहकारे मालिके सुदोज़ियाँ तुम पर
हर उम्मती की अयशहे कौनों मकां तुम पर
कुरबान जिन्दगी या अइयोहन्नबी
दिल ने हमारे पा लिया है अपना मुददआ
इश्के रसूले पाक का है ग़म इसे मिला
कुरबान हर खुशी या अइयोहन्नबी

छूटा जो मुझसे है तेरा दरबार हो गई
तुझसे बिछड़ के अय मेरे सरकार हो गई
बेकैफ़ जिन्दगी या अइयोहन्नबी
दोनों जहाँ के मालिको मुख़्तार तुमसे है
कहते शजर तारे है अय सरकार तुमसे है
आलम में रोशनी या अइयोहन्नबी

हज़रते आयशा (रज़ी0) ने कहा

मज़्कूरा नात का बानी हज़रते आयशा रज़ी0 का ये क़त्आ है

लना शम्सुन व लिल आफ़ाके शम्सुन
एक हमारा सूरज है और एक आस्मान का सूरज है
व शम्सी ख़ैरो मिन शमसिस्समाए
और मेरा सूरज आस्मान के सूरज से बेहतर है
फइन्नश शम्सा तत्लअ बादा फ़ज़रिन
तो बिला शुबह आसमान का सूरज फ़ज्र के बाद तुलू होता है
व शम्सी तालेउन बअदल इंशाए
और मेरा सूरज एशा के बाद तुलू होता है

इस नात को पढ़ने के दौरान मैं बीच बीच में ये क़त्आ भी पढ़ता रहता हूँ

आपके सामने

हज़रते आयशा ने कहा आपके सामने
हेच सूरज की भी है ज़िया आपके सामने
आपने जब कदम रख दिये मोम पत्थर हुए
संग रेज़ों ने कल्मा पढ़ा आपके सामने
क़ाबा कौसेन को देख लो इस पे शक है अगर
शब है मेराज की ,है खुदा आपके सामने
हर तरफ है क़यामत बपा अब करम कीजिये
अर्ज़ करते है सब अम्बिया आपके सामने
देखते थे कभी आपको और कभी चाँद को
चाँद लगता था बेनूर सा आपके सामने
हों वो इन्सानों जिन्नों मलक साकिनाने फ़लक
अर्ज़ करते हैं सब मुददआ आपके सामने
ऐसे मलऊन पर बाखुदा दस्ते कुदरत उठा
सर उठाया है जिसने शहा आपके सामने
उम्मे सलमाँ के हाथों में दी ख़ाके करबो बला
था शजर मन्ज़रे करबला आपके सामने

रहमते आलम

कोई नहीं अपना है हमदम रहमते आलम रहमते आलम
लब पे यही रहता है हरदम रहमते आलम रहमते आलम
चैन आ जाएगा बिसमिल को जुल्मत दूर करो इस दिल को
नूर से भर दो नूरे मुजस्म रहमते आलम रहमते आलम
बागे नबुव्वत की कलियों में मेरे आक़ा सब नबियों में
आप मोअख्ख़र आप मुकददम रहमते आलम रहमते आलम
लेके सहीफा साथ है आई आपकी जिसदम ज़ात है आई
कुफ्र हुआ उस रोज़ है बेदम रहमते आलम रहमते आलम
हमको जन्नत दिलवाएगा रोज़े महशर काम आएगा
आपका दामन आपका परचम रहमते आलम रहमते आलम
खजरा का दीदार करा दो शहरे मदीना हमको दिखा दो
दिल है पशेमा आँख है पुरनम रहमते आलम रहमते आलम

मोहम्मद जो आए

मोहम्मद जो आए मोहम्मद जो आए
तो फिर जुल्मतों के कदम थरथराए मोहम्मद जो आए
बड़ा खौफ था हम थे जुल्मत की ज़द में
अंधेरा बहोत था हमारी लहद में
वो आए तो अन्वार भी साथ लाए मोहम्मद जो आए
खुदा कोनहीं जानती थी ये दुनिया
बुतों को खुदा मानती थी ये दुनिया
खुदा तक पहुँचने के रस्ते दिखाए मोहम्मद जो आए
था बूजेहल कोई तो कोई था उत्बा
कोई बुलहब और कोई था शैबा
उन्हीं ने है फारुकों उस्माँ बनाए मोहम्मद जो आए
थी छाई खिज़ाँ दीन के गुलसिताँ पर
तराने न थे बुलबुलों की ज़बाँ पर
शजर चिटखी कलियाँ ये गुल मुस्कुराए मोहम्मद जो आए

मोईना मोहम्मद

मोईना मोहम्मद मोईना मोहम्मद मोईना मोहम्मद मोईना मोहम्मद
अमीना मोहम्मद वसीना मोहम्मद नबीना मोहम्मद वलीना मोहम्मद
सखीना मोहम्मद वसीना मोहम्मद सफ़ीना मोहम्मद मोईना मोहम्मद
मुनव्वर मुनव्वर है सीना मोहम्मद मोअत्तर मोअत्तर पसीना मोहम्मद
बियाबाँ बियाबाँ है रहबर मोहम्मद समन्दर समन्दर सफ़ीना मोहम्मद
जिसे छू के है झूमती डाली डाली तेरे शहर की वो हवा बेमिसाली

तेरा सब्ज़ गुमबद तेरी नूरी जाली मुझे देखना है मदीना मोहम्मद
जहाँ ने सितम ढाए हैं सरवरे दीं तेरे दर पे हम आए है सरवरे दीं
हमें भीख दे दे तेरे पास तो है दो आलम का सारा खज़ीना मोहम्मद
चमकने लगा तब से मेरा मुकद्दर समाया है जब से मदीने का मन्ज़र
मुनव्वर मुनव्वर हुई मेरी आखें मुजल्ला हुआ मेरा सीना मोहम्मद
वो फारुके आज़म वो सिद्दीके अकबर वो उस्मानों हैदर वो सलमानों बूज़र
फलक के हैं तारे सहाबा तुम्हारे मिला इनसे जन्नत का ज़ीना मोहम्मद
हमारे मुआविन हमारे हैं सरवर अली फातमा और शब्बीरो शब्बर
हमें मौजे तूफाँ का खतरा हो क्यूँ कर तेरी आल जब है सफीना मोहम्मद
वो करबल की धरती वो खूँ रेज़ मन्ज़र वो मजरुह अकबर वो नन्हाँ सा असगर
जो तेरे घराने का सुनता हूँ किस्सा मेरा ग़म से फटता है सीना मोहम्मद
नहीं मौत का ख़ौफ़ मुझको शजर है मेरे लब पे जिक्रे शहे बहरोबर है
तेरे नाम पर मेरा मरना मोहम्मद तेरे नाम पर मेरा जीना मोहम्मद

मुस्तफ़ा स0अ0व0

मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा
शाफ़ए यौमे दीं दाफ़ए हर बला मुस्तफ़ा मुस्तफ़ा मुस्तफ़ा मुस्तफा
मुश्किलों मे हमारा है बस आसरा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा
जब तपिश रोज़े महशर की झुलसाएगी
अल अमाँ अल अमाँ की सदा आएगी
साएबाँ तब बनेगी तुम्हारी रिदा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा
गुज़रे ऐसे भी उशाके खैरुल बशर
रुबरुए अदू हों के सीना सिपर

तीर खाते रहे इश्क कहता रहा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा
इख्तियारात हैं ये नबी के लिये
देखिये तो नमाजे अली के लिये
इक इशारे पे सूरज को पलटा दिया मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा
फर्श पर हों या सिदरा के मेंहमान हों
वो नमाज़े हों या हज के अरकान हों
रब को महबूब है आपकी हर अदा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा
जब जलाले खुदा सबको लरज़ाएगा
अप ही का करम सबके काम आएगा
आखिरत में जहन्नम से लोगे बचा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा
सामने आपका नूरी दरबार हो
झनझनाता मेरे दिल का हर तार हो
वालेहाना मेरे लब पे हो ये सदा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा मुस्तफा

नूरानी शब

उनकी आमद की नुरानी शब है सुब्हे नौ मुस्कुराने लगी है
मोमिनों आओ खुशियाँ मनाएँ ज़ाते सरकार आने लगी
कुफ्र के छाए बादल थे हर सू और न था शिर्को बिदअत पे काबू
रहमते हक़ बरसने लगी जब लहलहाने लगे तेरे गेसू
अय शहे जुज़्ज़ो कुल दीं की खेती तुझसे ही लहलहाने लगी है
बे बहा हमको दौलत मिली है यानी उनकी मोहब्बत मिली है
जिसको उनकी मोहब्बत मिली है उसको हर दुख से राहत मिली है

जो गदा उनका है उसकी किस्मत बाखुदा जगमगाने लगी है
सुन के ज़लिम ये थर्रा गये हैं वो हबीबे खुदा आ गये है
और मज़्लूम खुश है वो देखो रहमते दोसरा आ गये हैं
झूम उठी है फ़जा और सबा भी गीत आमद के गाने लगी है
तू तो है राहते क़ल्बों सीना अय शहन्शाहे अर्ज़े मदीना
जिसको चौखट तेरी मिल गई है मिल गया उसको जन्नत का ज़ीना
खौफ़ क्या उसको हो तेरे दर पर जिसकी मिट्टी ठिकाने लगी है
अय जिगर गोशए आमेना बी सुन लो फरियाद इस मुल्तजी की
बहरे ग़म के भँवर में फँसा है डूब जाए न सरकार कश्ती
आओं आक़ा मदद को शजर की इसको दुनियाँ सताने लगी है

अल्लाहू अल्लाह

अल्लाहू अल्लाह अल्लाहू अल्लाह अल्लाहू अल्लाह अल्लाहूअल्लाह
तेरी सना कुर्आ अय अब्दे रहमाँ अय सबके आका
अल्लाहू अल्लाह
हस्बी रब्बी जल्लल्लाह माफ़ी क़ल्बी ग़ैरुल्लाह नूर मोहम्मद सल्लल्लाह
अल्लाहू अल्लाह
हश्र के दिन सबने लाख किये सजदे रब न हुआ राज़ी काम नही आए
देख के सब हैराँ बख़्शिश का सामाँ आपका एक सजदा
अल्लाहू अल्लाह

चाँद से भी रौशन चेहरा पाया है आपको खालिक ने ऐसा बनाया है
मुशरिक आते हैं ईमाँ लाते हैं देखके बस चेहरा
अल्लाहू अल्लाह
अर्श के हो तारे शम्सो क़मर हो तुम नूर सरापा हो या के बशर हो तुम
फ़िक्र हिरासाँ है अक्लें हैराँ है क्या हो तुम अय आका
अल्लाहू अल्लाह
तेरा खुदा आला तू भी नबी अफ़ज़ल तेरे कदम अशरफ़ तेरी ज़मी अफ़ज़ल
तू कैसा होगा जब शहरे तैबा अर्श का है टुकड़ा
अल्लाहू अल्लाह
अय इब्ने हैदर आपकी कुरबानी क्यूँ न बने दुनियाँ आपकी दीवानी
अय मेरे आका आपका है सदक़ा आलम है कहता
अल्लाहू अल्लाह
बोला फ़रिश्ता हम साथ न जाएगें हम जो बढ़े आगे पर जल जाएगें
तुम हो हबीबे रब रब ने बुलाया है आज तुम्हें तन्हा
अल्लाहू अल्लाह
सारी ज़मीं देखी सारे ज़माँ देखे देखने वालों ने दोनों जहाँ देखे
हर एक को देखा कोई नहीं पाया आप सा अय आका
अल्लाहू अल्लाह
पथरीली धरती और इन्साँ हैवाँ पत्थर के बुत थे पत्थर दिल इन्साँ
वो जो शजर आया उसने ही पढ़वाया पत्थर से कल्मा
अल्लाहू अल्लाह

रहमतो की घटा

आ गये आगये आ गये आ गये आ गये आ गये मुस्तफा आ गये
परचमें अम्न आलम में लहरा गये आ गये आ गये मुस्तफा आ गये
नारे दोज़ख से हमको बचाऐगें वो
हश्र के रोज़ जन्नत दिलाऐगें वो
कोई आफ़त जो सर पर कभी आएगी
रहमतो की घटा बनके छाऐगें वो
उम्मती आज फ़ज़्ले खुदा पा गये आ गये आ गये मुस्तफा आ गये
झूमती धरती है झूमता है गगन
आज बिखरी है खुशबू चमन दर चमन
जब अरब के धुधलके से फूटी किरन
जगमगाने लगी अन्जुमन अन्जुमन
जो अंधेरे में थे रोशनी पा गये आ गये आ गये मुस्तफा आ गये
हर तरफ बारिशे नूर होने लगी
तीरगी शिर्क की दूर होने लगी
जो ज़मीं कुफ़्रो इल्हाद में चूर थी
अब मसर्रत से मामूर होने लगी
उनके गेसू फ़ज़ाओं में लहरा गये, आ गये आ गये मुस्तफा आ गये
मेहरबां ख़ल्क़ पर रबतआला हुआ चेहरा जुल्मो तशदुद का काला हुआ
आप आए जहां में उजाला हुआ, दीन का हर तरफ बोल बाला हुआ
दुश्मने दीने इस्लाम थर्रा गए, आ गये आ गये मुस्तफा आ गये
नूह को उनके सदक़े किनारा मिला, हुस्ने यूसुफ़ को हुस्ने नज़ारा मिला
रंग लाई दोआए ख़लीली शजर, ख़ल्क़ को अर्शे आज़म का तारा मिला
अम्बियाओ रूसुल मुददआ पा गये आ गये आ गये मुस्तफा आ गये

रसूले अरबी

हर लब पे तराना है रसूले अरबी का
हर दिल में ठिकाना है रसूले अरबी का
आदम का ज़माना हो के ईसा का ज़माना
हर एक ज़माना है रसूले अरबी का
सब कुछ जो लुटा देता है इस्लाम के ख़ातिर
वो सिर्फ घराना है रसूले अरबी का
घटता ही नहीं बँटता ही रहता है बराबर
क्या खूब ख़ज़ाना है रसूले अरबी का
तुम मान लो इसको तो है दानाई इसी में
हर खेत का दाना है रसूले अरबी का
हर बात निराली है रसूले अरबी की
अन्दाज यगाना है रसूले अरबी का
है ईद का दिन क्यूँ न हों हर सिम्त बहारें
शब्बीर हैं शाना है रसूले अरबी का

गुलज़ारे मदीना

मुझको अम्बर न खज़ीना न दफीना दे दे
मेरे रब खुशबूए गुलज़ारे मदीना दे दे
मेरी नस्लों को महकने के लिये अय मालिक
एक क़तरा मेरे आका का पसीना दे दे
पार होना है गुनाहों के समन्दर से मुझे
पन्जतन पाक का अल्लाह सफ़ीना दे दे
जिसमें सौदा हो तेरे इश्क का वो सर दे दे
जिसमें तस्वीर हो ख़ज़रा की वो सीना दे दे
आने वाले हैं वो वश्शम्स की तफ़्सीर है जो
दीद का कब्र में अल्लाह करीना दे दे
सुर्ख़रु हो के पहोंचना है बरोज़े महशर
मुँह पे मलने के लिये खाके मदीना दे दे
अय खुदा इल्म अली को जो दिया था तूने
बस शजर को भी वही सीना ब सीना दे दे

ला इलाहा इल्लल्लाह

हस्बी रब्बी जल्लल्लाह माफ़ी क़ल्बी ग़ैरुल्लाह
नूर मोहम्मद सल्लल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाह
तेरे सदक़े में आक़ा सारे जहाँ को दीन मिला
बेदीनों ने कलमा पढ़ा ला इलाहा इल्लल्लाह
सिम्ते नबी बुजेहल गया आका से उसने ये कहा
गर हो नबी बतलाओ ज़रा मेरी मुट्ठी में हैं क्या
आका का फरमान हुआ और फ़ज़्ले रहमान हुआ
मुट्ठी से पत्थर बोला ला इलाहा इल्लल्लाह
अपनी बहन से बोले उमर ये तो बता क्या करती थी
मेरे आने से पहले क्या चुपके चुपके पढ़ती थी
बहन ने जब कुर्आन पढ़ा सुनके कलामे पाके खुदा
दिल ये उमर का बोल उठा ला इलाहा इल्लल्लाह
वो जो बिलाले हब्शी है सरवरे दीं का प्यारा है
दुनियाँ के हर आशिक की आखों का वो तारा है
जुल्म हुए कितने उस पर सीने पर रक्खा पत्थर
लब पर फिर भी जारी था ला इलाहा इल्लल्लाह

दुनियाँ के इन्सान सभी शिर्को बिदअत करते थे
जो रब के थे बन्दे वो बुत की इबादत करते थे
बुत खाने है थर्राए मेरे नबी है जब आए
कहने लगी मख़्लूके ख़ुदा ला इलाहा इल्लल्लाह
गुलशन कल्मा पढ़ते है चिड़िया कल्मा पढ़ती है
दुनिया की मखलूक सभी जिक्र ख़ुदा का करती है
कहते सभी हैं जिन्नो बशर कहता शजर है कहता हज़र
कहता है पत्ता पत्ता ला इलाहा इल्लल्लाह

अल मुस्तफ़ा

अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
ख़ैरुल उमम नूरुलहुदा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
ख़ैरुल बशर ख़ैरुल वरा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
बदरुददुजा सदरुलओला अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
काफ़िल्वरा शम्सुददोहा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
बेकस हैं हम बे आसरा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा

और आप हैं बहरे अता अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
हम पर करम की एक नज़र हो अय हबीबे किबरिया
हम है असीराने बला अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
जिसमें न हो हुब्बे नबी बेकार है वो बन्दगी
नामे नबी पर हो फ़िदा वो ज़िन्दगी है ज़िन्दगी
इश्के नबी का जाम लो हर दम नबी का नाम लो
कहते रहो सुब्हो मसा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
अल्हम्द से वन्नास तक कुर्आं कसीदा है तेरा
हक़ मिदहते सरकार का इन्साँ करे कैसे अदा
हूरो मलक के साथ खुद जब कह रहा है किबरिया
सल्ले अला सल्ले अला अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
मुख़्तारे कुल सरकार हैं ख़त्मे रुसुल सरकार हैं
हैं मन्ज़िले राहे हुदा नूरे सुबुल सरकार हैं
ईमान है इस पर मेरा अफ़ज़ल हो तुम बादे ख़ुदा
अय ताजदारे अम्बिया अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
नक्शे कफ़े पाए नबी कोई बशर जो चूम ले

बोसे उसी के पाँव के आलम का हर मख़्दूम ले
इसका जहाँ महकूम है खादिम नहीं मख़्दूम है
जो भी तुम्हारा है गदा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
ताएफ़ का वो बाज़ार है कुफ़्फार की यलगार है
हर जख़्म पर जो दे दुआ वो अहमदे मुख़्तार है
सानी तेरा कोई नही था रहमतुललिल आलमीं
दुश्मन को दी तूने दोआ अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा
इन्नी असीयुन मुजरेमुन इन्नी हक़ीरुन अहकरो
अन्ता करीमुन अकरमों अन्ता हसीनुन अहसनो
इन्नी असी अन्ता सख़ी इन्नी मरज अन्ता शफी
अन्ता नबीइल मुज्तबा अल मुस्तफा अल मुस्तफा
नाते मोहम्मद का सफर तै क्या करेगा तू शजर
मिदहत रसूलल्लाह की करता है हर फर्दो बशर
सारा जहाँ मख़्मूर है इश्के नबी में चूर हैं
हर एक है देता सदा अल मुस्तफ़ा अल मुस्तफ़ा

सजदए शजर

पढ़ लिया उसने कल्मा उनका
जिसने देखा चेहरा उनका
सारी दुनियाँ ने अपनाया
रस्ता उनका शेवा उनका
रोज़े महशर काम आएगा
दामन उनका रिश्ता उनका
जिसमें लाखों सूरज तैरें
ऐसा प्यारा मुखड़ा उनका
चाँद छुपा ले शर्म से चेहरा
देख अगर ले मुखड़ा उनका
सारे आलम के वो दाता
सारा आलम मंगता उनका
पीते है सब नाग' का उनके
खाते हैं सब सदक़ा उनका
नूर की किरनें फूट रहीं हैं
कितना हंसी है चेहरा उनका
कुफ्र कहे ये किसकी जुर्अत
करता शजर है सजदा उनका

मदीने वाले

जल्वा दिखाइये तैबा बुलाइये अय मेरे मुस्तफा मदनी मदीने वाले
बेचैन है नज़र अय शाहे बहरो बर अय नूरे किब्रिया मदनी मदीने वाले
काम आएगी न दौलत काम आएगी न शोहरत काम आएगी हमेशा मेरे आका की मोहब्बत
दुनियाँ में हशर में उक़्बा में क़ब्र में काम आएंगे सदा मदनी मदीने वाले
जिसको उनका दर मिला है उसको सब कुछ मिल गया है
जिससे राज़ी मुस्तफा है उससे राज़ी किबरिया है
उनकी रज़ा है जो रब की रजा है वो
महबूबे किबरिया मदनी मदीने वाले
सबसे ऊँची बात तेरी सब से आला जात तेरी
तेरा सुरज चाँद तेरा दिन है तेरा रात तेरी
तू है मुख्तारे कुल तू है खत्मे रुसुल
तू शाहे दोसरा मदनी मदीने वाले
सुबहे मक्का शामे तैबा अब दिखा दो शाहे बत्हा
दिल में इतनी है तमन्ना देख लूँ मै तेरा रौजा
मुझ पर करो करम अय साहेबे हरम
मिल जाए दर तेरा मदनी मदीने वाले
कैसा प्यारा है घराना रहमतों का है खज़ाना
जिसने दीं पर जान दे दी उस नवासे के हो नाना
करबल में कट गया वो सर जो आपने
चूमा था बारहा मदनी मदीने वाले
दूर इससे इसका घर है मुन्हसिर ये आप पर है
लाज रख ले अपने खूँ की ये तमन्नाए शजर है
हसरत है इल्म की चाहत है इल्म की
कर दो इसे अता मदनी मदीने वाले

मरहबा सल्ले अला

मरहबा सल्ले अला मरहबा सल्ले अला मरहबा सल्ले अला
आए महबूबे खुदा मरहबा सल्ले अला शोर आलम में उठा मरहबा सल्ले अला
हूरोगिल्माँ ने कहा मरहबा सल्ले अला जिन्नो इन्साँ ने कहा मरहबा सल्ले अला
बद्रके कुर्आ ने कहा मरहबा सल्ले अला यानी रहमाँ ने कहा मरहबा सल्ले अला
कह उठे हर अम्बिया मरहबा सल्ले अला
ज़ाते सरकारे ओला मरहबा सल्ले अला परतवे नूरे खुदा मरहबा सल्ले अला
आप ही शम्सुदोहा मरहबा सल्ले अला आप ही बदरुददोजा मरहबा सल्ले अला
आप है खैरुल वरा मरहबा सल्ले अला
जगमगाने जो लगी जगमें है शम्ऐ हिरा कुफ्र बेनूर हुआ फैली ईमाँ की ज़िया
आस्माँ ता बज़मी नूरे आक़ा बिखरा अदल का राज हुआ जुल्म का राज़ मिटा
बोली मख़्लूक़े खुदा मरहबा सल्ले अला
किसके दम से है ज़मी किसके दम से है फ़्लक है फ़ज़ाओं में बसी किसकी जुल्फों की महक
किसके सदके में मिली चाँद सूरज को ज़िया और सितारे है लिये किसके तलवों की चमक
वो तो है खैरुलवरा मरहबा सल्ले अला
खिल उठा आज के दिन आमेना तेरा चमन
रश्के कोनैन बना आमेना तेरा चमन
झूम उठीये ज़मी झूम उठा ये गगन
फूटी मक्के से शजर नूर की एक किरन
फैली आलम में ज़िया मरहबा सल्ले अला

सल्ले अला

सल्ले अला सल्ले अला सल्ले अला सल्ले अला
लब पर रहे जारी सदा सल्ले अला सल्ले अला
अय रब हमारी है दोआ सल्ले अला सल्ले अला
तू शाफ़ए रोजे जज़ा सल्ले अला सल्ले अला
नूरे अज़ल शम्ऐ हेरा सल्ले अला सल्ले अला
मा ज़ाग़ है आखें तेरी वश्शम्स है चेहरा तेरा
जुल्फ़ें तेरी काली घटा सल्ले अला सल्ले अला
टुकड़े क़मर के हो गये डूबा हुआ सूरज उगा
कन्कर ने भी कल्मा पढ़ा सल्ले अला सल्ले अला
महशर के दिन अय मुस्तफा हम आसियों का बाखुदा
कोई नहीं तेरे सिवा सल्ले अला सल्ले अला
जब मुश्किलें आने लगी गम की घटा छाने लगी
पढ़ने लगे सुबहो मसा सल्ले अला सल्ले अला
तू ही तो है नूरे खुदा हर शै में है जल्वा तेरा
क़ाबा तेरा क़िब्ला तेरा सल्ले अला सल्ले अला

कोई अगर बीमार हो मुफ़लिस हो और नादार हो
हर एक मरज़ की है दवा सल्ले अला सल्ले अला
होगी कयामत की घड़ी उस रोज़ भी छा जाएगी
रहमत तेरी बन कर घटा सल्ले अला सल्ले अला
तैबा में जब पहुँचा शजर मन्ज़र अजब भाया नज़र
हर एक देता था सदा सल्ले अला सल्ले अला

****

सरकार चले आए

सरकार चले आए सरकार चले आए
हम सारे ग़रीबों के ग़मख्वार चले आए
बातिल की गिराने को दीवार चले आए
खिल्कत के लिये लेकर अन्वार चले आए
इख़लास की लेकर वो तलवार चले आए
पढ़ते हुए कल्मा सब अग्यार चले आए
सरकार चले आए सरकार चले आए
हैं आज बराहीमों मूसा भी चले आए

याकूबो सुलैमानों ईसा भी चले आए
घर में तेरे अब्दुल्लाह यहया भी चले आए
करने सभी आक़ा का दीदार चले आए
सरकार चले आए सरकार चले आए
मरकद में थी तन्हाई का और घोर अंधेरा था
था खौफ़ का आलम और तारीकी ने घेरा था
पर दिल में मोहम्मद की उल्फत का बसेरा था
सरकार मेरे ले कर अन्वार चले आए
सरकार चले आए सरकार चले आए
मज़्लूमो गरीबों को कोई न सताएगा
आलम में कोई ज़ालिम अब जुल्म न ढाएगा
जो जैसा करेगा अब वो वैसा ही पाएगा
कहते हुए मज़्लूमो लाचार चले आए
सरकार चले आए सरकार चले आए
जो शाफ़ए महशर हैं जो मालिके कौसर हैं
है आमेना के जानी अब्दुल्ला के दिल बर है

हर फर्द के है हामी हर शख्स के यावर हैं
वो रहमते आलम वो ग़मख्वार चले आये
सरकार चले आए सरकार चले आए
हर कौम के आका पर सरदारे रसूलों पर
जब वक्त पड़ा लोगो कोनैन के सुल्तों पर
धरती पे ओहद की और उस बदर के मैदाँ पर
जाँ देने मोहाजिर और अन्सार चले आए
सरकार चले आए सरकार चले आए

★★★★★★★

ज़ेल मे अरबी उर्दू ज़बान की नातें

अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी
अन्नबी मुशफ़िक़ी अन्नबी मोहसेनी अन्नबी अन्नबी अन्नबी
अन्नबी जुल्करम अन्नबी मोहतरम
व हुआ खैरुल उमम व ख़फ़ीरुलहरम
दाइयुन हादियुन अन्नजी अस्सफी हाशमी क़रशी अन्नबी
अन्नबी अन्नबी अन्नबी

बेकसों को फ़क़ीरों को दाता किया
आपने ही गुलामों को आक़ा किया
आप जैसा न देखा किसी ने सख़ी
अन्नबी अन्नबी अन्नबी
वनशक़्क़त समा वहुआ यौमल्जज़ा
यस्जुदू मुस्तफा ला यक़ूलू सवा
उम्मती उम्मती उम्मती उम्मती उम्मती उम्मती उम्मती
अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी
नाज़िशे दो जहाँ बाइसे कुन फ़काँ
हासिले अर्श सय्यारए लामकाँ
मुस्तफा मुज्तबा मक्कियो हाशमी अन्नबी अन्नबी अन्नबी
अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी
जुल्म कुफ़्फ़ारे मक्का के सहते रहे
अल्अहद अल्अहद फिर भी कहते रहे
और बेलाले हबश के था लब पर यही
अन्नबी अन्नबी अन्नबी
अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबीअन्नबी अन्नबी
ख़लक़ल्लाहुददुना अर्ज़ुहु वस्समा
अर्रजुल वननिसा कुल्लुन लिल मुस्तफ़ा

वज़अल्लहो लहू अल अतारद कुतुब मुश्तरी मुश्तरी मुश्तरी
अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी
आप फ़ख़्रे अरब आप आली नसब
दो जहाँ है बने आप ही के सबब
आपकी ज़ात है जान तख़्लीक़ की
अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी
काना यम्शी शजर काना शुक्कल्कमर
यतहददस हजर कुल्लहा मुख़्तसर
मोअजज़ातुन्नबी मोअज्ज़ातुन्नबी मोअज़्ज़ातुन्नबी अन्नबी
अन्नबी अन्नबी अन्नबी अन्नबी

النبی النبی النبی النبی النبی النبی
النبی النبی النبی
النبی مشفقی النبی محسنی النبی النبی النبی
النبیٌ ذوالکرم النبی محترم
وهو خیر الامم وخفیر الحرم
داعیٌ هادیٌ النجی الصفی هاشمی قرشی النبی
النبیٌ النبیٌ النبیٌ

بے کسوں کو فقیروں کو داتا کیا
آپ نے ہی غلاموں کو آقا کیا
آپ جیسا نہ دیکھا کسی نے سخی
النبیُ النبیُ النبیُ
وانشقت سماء وھو یوم الجزاء
یسجد مصطفےٰ لا یقول سوا
اُمّتی اُمّتی اُمّتی اُمّتی امتی امتی امتی
النبیُ النبیُ النبیُ
نازشِ دو جہاں باعث کُن فکاں
حاصل عرش سیارہ لامکاں
مصطفےٰ مجتبیٰ مکی و ہاشمی
النبیُ النبیُ النبیُ
ظلم کفار مکہ کے سہتے رہے
الاحد الاحد پھر بھی کہتے رہے

اور بلالِ حبش کے تھا لب پہ یہی
النبیُ النبیُ النبیُ
خلق اللہ الدناء ارضہ والسماء
الرجل والنساء کُلٌّ للمصطفےٰ
وضع اللہ لہ الاتارد قطب مشتری مشتری مشتری
النبی النبی النبی النبی النبی النبی النبی
آپ فخرِ عرب آپ عالی نسب
دو جہاں ہیں بنے آپ ہی کے سبب
آپ کی ذات ہے جان تخلیق کی
النبیُ المنبیُ النبیُ
النبی النبی النبی النبی النبی النبی النبی
کان یمشی شجر کان شق القمر
یتحدث حجر کلھا مختصر
معجزات النبی معجزات النبی معجزات النبی النبی
النبی النبی النبی

अन्ता ले कुल्लिन रहमतो अरहम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम
अन्ता मोअज़्ज़म अन्ता मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम
कामिलो अकमल अकरमो अफ़हम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम
अज़मलो अनवर अहसनों आज़म सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम
तुझपें है नाजा हज़रते ईसा तेरे सनाख़्वाँ हज़रते मूसा
फख्ऱे इब्राहिमो आदम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम
लैसा कमिसलिक फी मख़्लूकिन लैसा फी मालिक वा मम्लूकीन
लैसा कमिसलिक फिब्ने आदम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम
तू तो आका अर्श नशी है तेरा हमसर कोई नही है
तू ही मोअज़्ज़म तू ही मुकर्रम सल्लल्लाहों अलैका वसल्लम
या मुज़्ज़म्मिल या मुददस्सिर काललल्लाहो कुम फ़ अनज़िर
कुमता अकामददीन फि आलम सल्लल्लाहो अलैकर वसल्लम
चाहे ये दुनियाँ जितना रोके टोकने वाला जितना टोके
पढ़ते रहेगें हश्र तलक हम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम
मा अहसनो का वस्फो नबीइन मा अजमलोका वज़्हो नबीइन
अन्ता कमरुल्लैलिलमुज़्लम सल्लल्लाहो अलैका वसल्लम
मेरे आका रोजे कयामत जाएगें सब सूए जन्नत
हाथ में लेकर आपका परचम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम

انــــت لـــِکُلِّ رحـــمۃُ ارحـــم
صــلّــی الـلّـــہُ عــلیک وســلـم
انــت مــعــظــم انــت مـکــرم
صــلّــی الـلّـــہُ عــلیک وســلـم
کــامــلُ اکــمـــل اکــرمُ افہـم
صــلّــی الـلّـــہُ عــلیک وســلـم
اجــمــلُ انــور احسـنُ اعــظـم
صــلّــی الـلّـــہُ عــلیک وســلـم
تجھپے ہیں نازاں حضرت عیسیٰ
تیرے ثناخواں حضرت موسیٰ
فخر ابراہیم وآدم
صــلّــی الـلّـــہُ عــلیک وســلـم
لیــس کـمثـلک فــی مـخـلـوق
لیــس فــی مــالک ومـمـلـوکِ
لیــس کـمثـلک فــی ابــن آدم
صــلّــی الـلّـــہُ عــلیک وســلـم

تو تو آقا عرش نشیں ہے
تیرا ہمسر کوئی نہیں ہے
تو ہی معظم تو ہی مکرم
صلّی اللّٰہُ علیک وسلم

یا مُزَّمِّل یا مُدَّثِّرُ
قال اللّٰہُ قُم فانذِر
قمتَ اقام الدین فی عالم
صلّی اللّٰہُ علیک وسلم

چاہے یہ دنیاں جتنا روکے
ٹوکنے والا جتنا ٹوکے
پڑھتے رہیں گے حشر تلک ہم
صلی اللہ علیک وسلم

ما احسنُک وصفُ نبي
ما اجملُک وجہُ نبي
انت قمرِ اللّیل المظلم
صلی اللّہ علیک وسلم

میرے آقا روز قیامت
جائیں گے سب سوئے جنت
ہاتھ میں لیکر آپ کا پرچم
صلّی اللّٰہُ علیک وسلّم

★★★★★★★

MADINAISTHEBESTMADINAISTHEBEST
IF YOU WANT TO SEE JANNAH SO GO
AWAY BE GUEST
MADINA IS THE BEST MADINA IS THE BEST
A BOOBAKAR USMAN ALI FAAROOQUE
YOUR FOLLOWER
AND ON YOU YAA RASOOLALLAH
NABUVVAT OVER
YOUR SAHABA VERY NICE AND YOU EVEN
PERFECT
MADINA IS THE BEST MADINA IS THE BEST
BEAUTIFUL YOUR LAND MADINA
BEAUTIFUL YOUR PLACE
BEAUTIFUL YOUR NABI MOHAMMAD
BEAUTIFUL HIS FACE
IN THE SOUTH IN THE NORTH I N EAST AND
IN WEST
MADINA IS THE BEST MADINA IS THE BEST
ABBOBAKAR USMAN UMAR IS ROOTS OF
THE UMMAH
HASAN HUSAIN FAATEMA ZAHRA OWNER
OF THE JANNAH

AAQA IS CITY OF THE KNOWLEDGE AND ALI IS GATE
MADINA IS THE BEST
ONE WHO PEACE AND MERCY AND
BLESSING FOR THE WORLD
ONE WHO KING OF THE OCEAN ONE
WHO KING OF WORLD
SEE HIM TO HIS HAND IS HIS PILLOW AND
BROKEN HIS MAT
MADINA IS THE BEST MADINA IS THE BEST

अरबी ज़बान के मनाकिबे मदार

अलहम्दो लेमन औजदा कुत्बन हलबिय्या
उअजूबता मन शाओ फरीदन अलविय्या
अन्नातो लेमन अब्असा फ़िलहिन्दे मदारन
अल्ख़ैरो लेमन अन्ज़ला फैज़न नबविय्या
ला यअकुलो ला यश्रेबो फ़िकुल्ले हयातिन
कद सय्यरकल्लाहो फ़रीदन समदिय्या
इन कुन्ता तशव्वकता तवाफ़ा हरमिल्लाह
तव्विफ फी मकनफूरेना कअबन अजमिय्या
या शैखो अना मुग़रको फ़ी बहरे हुमूमिन
खुज ऐदी तन्ज़्ज़रतनी शजरन हसनिया
बादे शहे लौलाक सना उसकी करूँ मैं
वो जिसने बहाया है यहाँ फ़ैज़ का दरिया
दीवानों चलो तौफ़े हरम मिल के करें सब
है हिन्द का काबा मेरे सरकार का रौज़ा

الحمدُ لِمَن اَوجَدَ قُطباً حَلَبِیَّ
اُعجوبةَ مَن شاءُ فریداً عَلَوِیَّ
النعتُ لِمَنْ اَبُعَث فی الهند مداراً
الخیرُ لِمن انزلَ فیضاً نبویًّا
لایاکل لایشرَب فی کُلِّ حیاتِ
قد صیّرکَ اللّٰهُ فریداً صَمدِیَّ
ان کنتُ تشوّقت طواف حَرمِ الله
طَوِّف فی مکنفورنا کعباً عجمِیَّ
یاشیخ انا مغرق فی بحر همومٍ
خُذایدی تنظّرتنی شجراً حسنِیَّ
بعد شہ لولاک ثنا اس کی کروں میں
وہ جس نے بہایا ہے یہاں فیض کا دریا
دیوانو چلو طوفِ حرم ملکے کریں سب
ہے ہند کا کعبہ میرے سرکار کا روضہ

तनज़्जर बेहालिल असी या मदार
तरहहम बेफ़ैज़िन्नबी या मदार
तुकस्सेमो नेअमाता फ़ैजिन्नबी
फ़शैयन लना या सखी या मदार
व इन्नी ग़रीकुन फी बहरिल हुमूम
फ़सहहिल व खुज बेयदी या मदार
व शुर्रेफा नूरल्बसारा बेका
इज़ा मा मसहत अमीं या मदार
नजमतो बेनूरिललआली लका
मदहतो बेमदहिन जली या मदार
व इरफ़अ नकाबन बे वजहिन मुनीर
फइन्नी शवीकुन वली या मदार
व उन्जुर इलैना बे नज़रिल करम
इलैका शजर मुलतजी या मदार

تنظر بحال العصی یا مدار
ترحَّم بفَیضِ النّبی یامدار
تُقسِّمُ نعماتَ فیضِ النبی
فشیاً لنا یاسخی یامدار
واِنّی غریقٌ فی بحر الهموم
فسهِّل وخُذبِیَدی یا مدار
وشُرِّفَ نورَ البصارة بِک
اذاما سَحتَ العمی یامِدار
نظمتُ بنورألئالی لک
مدحتُ بِمدحٍ جلی یا مدار
واِرفع نقاباً بوجهِ مُنیر
فاِنّی شویقٌ ولی یا مدار
وانظر الینا بنظر الکرم
الیک شجر ملتجی یامدار

उन्जुर बे नज़रिल्करम नज़रनलिल्लाहे
या मदारल आलमे शइयन लिल्लाहे
या अख़ी अहलन न सहलन मरहबा
क़ल्बका नवविर बे नूरिज़्ज़ाविया
कुल बे क़लबिन या वली नूरन लिल्लाहे
या मदारल आलमे शइयन लिल्लाहे
हो करम मौला के अय लख़्ते जिगर
फात्मा ज़हरा के अय नूरे नज़र
खाली है भर दो मेरा दामन लिल्लाह
या मदारल आलमे शइयन लिल्लाहे
अल्अजल या नूरा ऐनिल्मुस्तफा
अल वहा या नासिरा यौमिलजज़ा
अकरिम बेहुसनिल करम करमन लिल्लाहे
या मदारल आलमे शइयन लिल्लाहे
ला उरीदो दौलतन औदिरहमन
ला उरीदो शौकतन औमस्नदन

या सख़ी आतैनी इल्मन लिल्लाहे
या मदारल आलमें शइयन लिल्लाहे
हाज़िरे दरबार हैं उश्शाक सब
दीदेरुए पाक के मुश्ताक सब
रुख़ से उठा दो आज तो चिल्मन लिल्लाहे
या मदारल आलमे शइयन लिल्लाहे
इन्नका जेअता बेहुक्मिल मुस्तफा
नश्शरा फिलहिन्द दीनिल मुस्तफा
नश्शरा मिनका हेना दीनल लिल्लाहे
या मदारल आलमे शइयन लिल्लाहे

★★★★★★★

اُنظر بنظر الکرم نظراً للہ
یا مدار العالم شیاً للہ
یا اخی اھلاً وسھلاً مرحباً
قلبک نوّر بنور الزاویۃ
قل بقلبِ یا ولی نوراً للہ
یا مدار العالم شیاً للہ
ھو کرم مولیٰ کے اے لختِ جگر
فاطمہ زھرہ کے اے نورِ نظر

خالی ہے بھر دو مرا دامن للہ
یامدار العالمِ شیاً للہ
العجل یا نورَ عینِ المصطفےٰ
الوحیٰ یا ناصر یوم الجزاء
اکرم بحسنِ الکرم کرماً للہ
یامدار العالمِ شیاً للہ
لاارِیدُ دولةً او درهماً
لاارِیدُ شوکةً او مَسنداً
یاسخی اعطِنی عِلماً للہ
یامدار العالمِ شیاً للہ
حاضر دربار ہیں عشاق سب
دیدِ روئے پاک کے مشتاق سب
رخ سے اٹھادو آج تو چلمن للہ
یامدار العالم شیاً للہ
اِنَّک جِئتَ بحکم المصطفےٰ
نشَّر فی الھند دین المصطفےٰ
نشر منک ھنا دیناً للہ
یامدار العالم شیاً للہ

फिदाका वालेदाया बिलयकीना मदारल आलमीना
नजम्तो बे मदहका इक्दन समीना मदारल आलमीना
तेरा रौजा है रमहत का नगीना मदारल आलमीना
तेरा मरकद मिसाले तूरे सीना मदारल आलमीना
उनादी ऐना या शैखददुनाए व अदऊऐना या कुत्बुलवराए
सवाका लागयासी वल्मोईना मदारल आलमीना
हो तुम महबूब रब्बुल आलमीं के हो वारिस रहमतुललिल्आलमीं के
अली से पाया तुमने इल्मे सीन, मदारल आलमीना
फअन्ता आलिमो इलमिल्लदुन्नी अलिमता कुल्लहुम इन्सी वजिन्नी
फअल्लिमनी अना मिन जाहेलीना मदारल आलमीना
तुम्हारा रौजा आँखों में बसाऊँ तुम्हारे दर के बस चक्कर लगाऊँ
अबाबीलों का हो हासिल करीना मदारल आलमीना
तमन्ना है हर एक दिल में मचलती तुम्हारे आस्ताँ की हाजरी की
तुम्हारे नाम का आया महीना मदारल आलमीना
फइन्नी मुज्रेमुनअन्ता अफिय्युन फ़इन्नी आसियुन अन्ता शफीयुन
अगिस्नी या वली फी यौमें दीना मदारल आलमीना
मदद अय रहमते आलम के प्यारे जिगर के फातमा बीबी के पारे
घिरा तूफाँ से है मेरा सफ़ीना मदारल आलमीना
जमालुददीन का दामन भरा था मअज बिल्खी को जो तुमने दिया था
शजर को भी मिले वो इल्मे सीना मदारल आलमीना

فداک والدایٰ بالیقینا
مدار العالمینا
نظمتُ بمدحک عقداً ثمینا
مدار العالمینا
ترا روضہ ہے رحمت کا نگینہ
مدار العالمینا
ترا روضہ مثال طور سینہ
مدار العالمینا
اُنادی این یا شیخ الدُّناء
وادع این یا قطبَ الوراءِ
سواک لاغیاثی والمُعینا
مدار العالمینا
ہو تم محبوب ربُّ العالمیں کے
ہوا وارث رحمۃ للعالمین کے
علی سے پایا تمنے علم سینا
مدار العالمینا

فانت عالمُ علمِ اللدُنّیِ
علمتَ کُلّھُم اِنسی وجنّی
فعلّمنی انا من جاھلینا
مدار العالمینا
تمہارا روضہ آنکھوں میں بساؤں
تمہارے در کے بس چکر لگاؤں
ابابیلوں کا ہو حاصل قرینہ
مدار العالمینا
تمنا ہے ہراک دل میں مچلتی
تمہارے آستاں کی حاضری کی
تمہارے نام کا آیا مہینہ
مدار العالمینا
فانی مجرمٌ انت عفیٌّ
فانی عاصیٌّ انت شفیٌّ
اغثنی یا ولی فی یوم دینا
مدار العالمینا

مددائے رحمت عالم کے پیارے
جگر کے فاطمہ بی بی کے پارے
گھرا طوفاں سے ہے میرا سفینہ
مــــدارالــــعــــالــــمــيــــنــــا

جمال الدین کا دامن بھراتھا
معض بلخی کو جو تمنے دیاتھا
شجر کو بھی ملے وہ علم سینہ
مــــدارالــــعــــالــــمــيــــنــــا

★★★★★★★

मोईनी मुजीबीसख़ी या वलिय्यी
तनज़्ज़र हालिल असी या वलिय्यी
अना अस्फ़लो अन्ता इब्नो अलिय्यिन
अना अज़्लमो अन्ता नूरो नबीयिन

फ़नक़्विर बे नूरिन्नबी या वलिय्यी
तनज़्ज़र बेहालिल्असी या वलिय्यी
न क्यों देखे हैरत से अर्शे मोअल्ला
मेरी ये जबीने मुजल्ला मुजल्ला
अकीदत के सजदे लुटाए हैं
इसने मिली जब है चौखट तेरी या बलिय्यी
मदारददुना या मदारल्वराए मुग़ीसल हुमूमे समीयन्नेदाए
ख़बीरल जली वल ख़फी या वलिय्यी
तनज़्ज़र बेहालिल असी या वलिय्यी
गुलिस्ताने अग़्वासो अक़्ताब सारे
है तेरे ही झरनो से सैराब सारे
नहीं इस जहाँ में वली कोई जिसको
न पहुँची हो निस्बत तेरी या वलिय्यी
व अन्जुर इलैना बेनज़रिल करामा
जरल्लाहो अन्का उयूनस्सक़ा
हबीबन्नबी मुरशिदी या वलिय्यी

तनज़्ज़र बेहालिल असी या वलिय्यी
खड़े हैं सभी आशिक़े ज़ार तेरे
तेरे फ़ज़्ल के सब तलबगार तेरे
मुरादों से अय आका दामन को भर दो
तेरे दर पे है क्या कमी या वलिय्यी
इज़ा तदख़ुलो हिन्दना या मदारो
तोअर्रसिस बेना अस्सना या मदारो
तोबल्लेगना दीनन्नबी या वलिय्यी
तनज़्ज़र बेहालिल असी या वलिय्यी
अक़ीदत से जो भी है इसमें नहाता
शिफ़ा सारी बीमारियों से है पाता
ये है हर मरज़ की दवा कुत्बे आलम
तेरे दर की ईसन नदी या वलिय्यी
तेरे दर का ज़र्रा लगे है नगीना
फ़िदा इसमें हैं दो जहाँ का ख़ज़ीना
जो मंगता तेरे आस्ताँ का है आका
फ़िदा उसपे शाहिशही या वलिय्यी

معینی مجیبی سخی یا ولیٔ
تنظّر بحال العصی یا ولیٔ
انا اسفلُ انت ابنُ علیٔ
انا اظلم انت نورُ نبیٔ
فنوّر بنور النبی یا ولیٔ
نہ کیوں دیکھے حیرت سے عرشِ معلّٰی
مری یہ جبینِ تجلّی مجلّٰی
عقیدت کے سجدے لٹائے ہیں اس نے
ملی جب ہے چوکھٹ تری یا ولی
مدار الدُّنا یا مدار الوراءِ
مغیث الھموم سمیع النداء

خبیر الجلی والخفی یا ولی
تنظر بحال العصی یا ولی
گلستانِ اغواث واقطاب سارے
ہیں تیرے ہی جھرنوں سے سیراب سارے
نہیں اس جہاں میں ولی کوئی جس کو
نہ پہنچی ہو نسبت تری یا ولی
وانظر الینا بنظر الکرامة

جری اللہ عنک عبون السخاو ة
حبیب النبی مرشدی یا ولیؑ
تنظَّر بحالِ العصی یا ولیِ
کھڑے ہیں سبھی عاشق زار تیرے
ترے فضل کے سب طلب گار تیرے
مرادوں سے اے آقا دامن کو بھردو
ترے درپہ ہے کیا کمی یا ولیِ
اذاتدخل هندنا یا مدارُ
تُوسّس بناء الثناء یا مدارُ
تُبلّغنا دین النبی یا ولیؑ
لنظَر بحال العصی یا ولیؑ
عقیدت سے جو بھی ہے اس میں نہاتا
شفا ساری بیماریوں سے ہے پاتا
یہ ہے ہر مرض کی دوا قطب عالِم
ترے در کی ایسن ندی یا ولیِ
جو منگتا ترے آستاں کا غائب ہے آقا
فدا اُسپے شاھنشھی یا ولیؑ

O MY BROTHERS O MY SISTERS O MY DEAR FRIENDS
O MY LISTENRS O MY VITNESS MEN OR WOMEN
PLEASE SING WITH ME O PEAPLE SAY WITH ME TO GET HER
I LOVE YOU MADAAR
I WANT TO MADAAR
I NEED YOU MADAAR
I LIKE YOU MADAAR
YOUR FAMILY IS FAMILY OF RASOOLULLAH
YOU ARE NEAR OF MOHAMMAD NEAREST OF ALLAH
PEACE OF HASNAIN AND ZAHRA AND HEART OF HAIDAR
I LOVE YOU MADAAR
I WANT TO MADAAR
I NEED YOU MADAAR
I LIKE YOU MADAAR
YOUR PLACE IS VERRY NICE AND YOUR PLACE IS SO GOOD
EVERY PERSON LIVING AT YOUR PLACE WITH BROTHER HOOD
HINDU MUSLIM SIKH ISAAI THERE LIKE ABROTHER
I LOVE YOU MADAR I WANT TO MADAR
I NED YOU MADAR I LIKE YOU MADAR
मन की मुरादें आका तेरे दर पर पाता है
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई जो भी आता है
सब यकसां हैं दर पे तेरे जरदार हों या हों बे जर

ILOVEYOUMADAR IWANTTOMADAR
INEEDYOUMADAR ILIKEYOUMADAR
YOURTOMBISVERYNICEANDYOURTOMBIS CHARMING
EVERY DAY ON YOUR TOMB ARE ABABIL MOVING
I SAN, FLOWING AT YOUR PLACE ATTRACTIVE EVERY WEATHER
ILOVEYOUMADAR IWANTTOMADAR
INEEDYOUMADAR ILIKEYOUMADAR

आसमान चाहे टूटे या धरती हिल जाये
चाहे तूफाँ उठ्ठे सूरज सर पे आ जाये
हम को क्या डरना है जब दामन है तेरा सर पर

ILOVEYOUMADAR IWANTTOMADAR
INEEDYOUMADAR ILIKEYOUMADAR

****

हर एक है शैदायी हर एक है दीवाना
सरकार का ऐसा है अन्दाज करीमाना
मैखार हैं छलकाते मै इश्के रिसालत की
है रश्के मै कौसर सरकार का मैखाना
बेकार है आकाई मेरे लिये ऐ आका
हस्ती जो मेरी गुजरे इस दर पे गुलामाना

अब अपनी मुहब्बत से लिल्लाह इसे भर दो
अय कुत्बे जहां शायद खाली है यह पैमाना
अय कुत्बे जहां तेरा दरबार है कुछ ऐसा
हर एक को मिलता है अपना हो या बेगाना
इस आलमे हस्ती में जब तू न सुकूं पाये
ऐ मेरे दिले मुजतर इस दर पे चले आना
अब इश्को मोहब्बत के बुझते हुए अंगारे
सरकार की नगरी में रह कर के है दहकाना
दीवानगी नादानी इस दर की अजब देखी
हुश्यार है दीवाना नादान भी है दाना
जब कुत्बे दो आलम की निस्बत का है गहवारा
फिर हो न शजर कैसे रोशन तेरा काशाना

****

सुकून घर में मिले मुतमइन सफर में रहे
मदारे पाक की जो शख्स भी नज़र में रहे
नबी के हुक्म से तबलीगे दीन की खातिर
तमाम उम्र मदारे जहां सफर में रहे
तुम्हारी दिल में मोहब्बत रहे मदारे जहां
तुम्हारे इश्क का सौदा हमारे सर में रहे

तुम्हारे प्यार ने बख्शा जो कैफे कैफियत
खुदा करे वो सदा दर्द सा जिगर में रहे
अजब बशर थे मिला था मकामे समदियत
बशर से दूर रहे जुम्रऐ बशर में रहे
मुझे सदा से हिमायत है आपकी हासिल
हों जिसके आप वो क्यों कर किसी के डर में रहे
अबुल वक़ार के शजरे को जो मुयस्सर है
खुदा करे वह पाकीज़गी शजर में रहे

★★★★★★★

आका मेरे विलायत के शाहकार हो तुम
बे मिस्ल औलिया में कुतुबुल मदार हो तुम
मुख्तारे कुल के प्यारे ईसा के तुम हो वारिस
मुर्दो को जिन्दगी दो बा इख्तियार हो तुम
कहता है यह चमन का हर गुल हर एक गुन्चा
जिसमें खिजां नहीं है ऐसी बहार हो तुम
शाहाना जिन्दगी को ठुकराया हिन्द आये
ठोकर में जिसकी शाही वह ताजदार हो तुम

जितने भी सिलसिले हैं है फैज़याब तुम से
निकली हैं जिनसे नदियां वह आबशार हो तुम
गिरते हुये संभलते हैं नाम से तुम्हारे
मुश्किल कुशा अली के आईना दार हो तुम
मोमिन के वास्ते हो तुम रहमतों के पैकर
है कुफ्र जिस से लरजां वो जुल्फिकार हो तुम
जिस को है तुम से निस्बत है रब की उस पे रहमत
मकबूले बारगाहे परवरदिगार हो तुम
कोई तुम्हारी किरणों को किस तरह छुपाये
सूरज के मिस्ल दुनियां पर आशकार हो तुम
कुतुबुल मदार तुम से यह भी है मेरा रिश्ता
मैं हूं शजर वकारी और बा वकार हो तुम

★★★★★★★

जिन्दगी की सुबह हो या शाम हो कुत्बुल मदार
लब पे तेरा जिक्र तेरा नाम हो कुत्बुल मदार
तुमको दरबार नबी से पहले होता है अता
हुक्म हो कोई भी कोई काम हो कुत्बुल मदार

जिन्दगी हो मौत हो महशर हो या रोजे जज़ा
तुम ही से आगाज़ तुम अंजाम हो कुत्बुल मदार
काश मैखाना तेरा हो और तू हो रू ब रू
हाथ में इश्के नबी का जाम हो कुत्बुल मदार
यह तमन्ना ए दिली है इस शजर का भी सदा
खादिमाने सिलसिला में नाम हो कुत्बुल मदार

****

जलवा है मदीने का सरकार की गलियों में
तारा है हर इक ज़र्रा सरकार की गलियों में
पूरी हुयी हर मनशा सरकार की गलियों में
जो मांगा है वो पाया सरकार की गलियों में
यह बात ज़रा क़ाजी मुतहर से कोई पूछे
क्या खोया है क्या पाया सरकार की गलियों में
जो तूरे मुनव्वर पर मूसा को नज़र आया
वो नूर नजर आया सरकार की गलियों में
सरकार की गलियों की देखो तो शजर अज़मत
हर खार है गुल जैसा सरकार की गलियों में

जमाने भर पे है एहसां मदार वालों का
बहुत वसीअ है दामां मदार वालों का
इन्हें जमाने की गर्दिश सता नहीं सकती
है रब तआला निगेहबां मदार वालों का
न क्यूं जमीनों जमां हो मदार वालों के
है दो जहान का सुल्तां मदार वालों का
यह उनकी आल हैं जिब्रील जिनके दरबां थे
हदीसें इनकी हैं कुरआं मदार वालों का
बशक्ले अशरफो बरकातो साबिरो वारिस
है आम खल्क़ में फ़ैज़ां मदार वालों का
हर एक सम्त में गूंजे मदार का नारा
यही है दोस्तो अरमां मदार वालों का

****

औलिया के इमाम का क्या कहना
अय मदारुल मुहाम क्या कहना
आप ही की है ज़ात पर क़ायम है
दो जहां का निजाम क्या कहना
तुम जहां हो वहां बरसती है
रहमतें सुब्हो शाम क्या कहना

हिन्द में आके तुम ने छलकाया
इश्के अहमद का जाम क्या कहना
आपने औलिया में पाया है
सब से आला मकाम क्या कहना
बारगाहे नबी में हैं मकबूल
तेरे दर का गुलाम क्या कहना
सारी दुनिया को दे दिया तुमने
दीने हक का पयाम क्या कहना
बस गुलामाने कुत्बे आलम में
हो शजर का भी नाम क्या कहना

★★★★★★★

यह मनकबत फिराक के उन लम्हात की यादगार है जब मैं बारगाह मदार से दूर सात समन्दर पार जेरे तालीम था।

आया हूं सरकार सात समन्दर पार
छोड़ के सब घर बार सात समन्दर पार
नूरी नूरी घर आंगन और नूरी बामो दर
देखने पहुँचने हैं आका सब आपके रोज़े पर
लेकिन एक नादार सात समन्दर पार
दुनिया की सारी नदियां जिस पर करती हैं नाज
उस ईसन की पाक जमीं को देती हैं आवाज़
अश्कों की बौछार सात समन्दर पार

तेरी शानो शौकत तेरा जलवा देखा है
हमने तेरे नाम का चलते सिक्का देखा है
अय मेरे सरकार सात समन्दर पार
अय आका अय वलियों के सरदार बना डालो
तुम चाहो मुझ कतरे को सरकार बना डालो
एक बहरे जख्खार सात समन्दर पार
मेरी खुशी और मेरे हर गम देखते रहते हैं
मेरा शजर ईमान है हर दम देखते रहते हैं
जिन्दा शाह मदार सात समन्दर पार

★★★★★★★

कोई गमख्वार नहीं, कोई गमख्वार नहीं
जुज़ तेरे आक़ा मेरा कोई मदद गार नहीं
कोई गमख्वार नहीं, कोई गमख्वार नहीं
यह जमाना है अजब अय शहेन्शाहे हलब
जब तलक है मतलब तब तलक मिलते हैं सब
बे गरज़ कोई भी देता है यहां प्यार नहीं
कोई गमख्वार नहीं, कोई गमख्वार नहीं
कौन है अपना भला कुत्बे दीं तेरे सिवा

किसको आवाज मैं दूं किसको आका दूं सदा
बहरे इम्दाद कोई आता ही सरकार नहीं
कोई गमख्वार नहीं, कोई गमख्वार नहीं
उनके मंगतों के लिये रब ने दर खोल दिये
उनके आँसू जो बहे तो गोहर रोल दिये
क्या गदा तेरा गदाए शहे अबरार नहीं
कोई गमख्वार नहीं, कोई गमख्वार नहीं
ठोकरें खायीं बहुत तेरे दरबार में हूं
दिल लिये आया शहा तेरे बाजार में हूं
कोई इस टूटे हुये दिल का खरीदार नहीं
कोई गमख्वार नहीं, कोई गमख्वार नहीं
मेरे चेहरे पे जमीं ग़म की क्या गर्द नहीं
कोई सुख दुख का नहीं कोई हमदर्द नहीं
क्या मेरे अपने ही मेरे लिये अग़यार नहीं
कोई गमख्वार नहीं, कोई ग़मख्वार नहीं
एक दिन आयेगा जब बेनिशां हम होंगे
खाके पा गर हैं तेरी कहकशा हम होंगे
हम शजर वाकई शोहरत के तलबगार नहीं
कोई गमख्वार नहीं, कोई गमख्वार नहीं

★★★★★★★

सारे वलियों के अय ताजदार
अल मदद अल मदद या मदार
तुम हो महबूबे परवरदिगार
अल मदद अल मदद या मदार
हम परेशान हैं और मेहमान हैं
आप तो सारे आलम के सुल्तान हैं
गैर मुम्किन तलब गैर से हम करें
आप मरक़द में खुद जलवा सामान हैं
आप ही हम सभी के निगेहबान हैं
आप दीने मुहम्मद की पहचान हैं
मांगते है वसीले जो आपके बस
वही लोग सच्चे मुसलमान हैं
आप हर एक के हैं गम गुसार
अल मदद अल मदद या मदार
हम को दरबारे कुत्बुल वरा मिल गया
यानी जन्नत का लोगों पता मिल गया
हम को दरबारे कुत्बुल वरा क्या मिला
हक के महबूब का सिलसिला मिल गया
आप से ही नबी का पता मिल गया
जब नबी मिल गये तो खुदा मिल गया

हमको असहाब की भी मोहब्बत मिली
और हसनैन का वास्ता मिल गया
बीबी ज़हरा के दिल के करार
अल मदद अल मदद या मदार
बे सहारा हूं मैं आसरा कौन है
मेरे दर्दे जिगर की दवा कौन है
मैं हूं बीमारे गम और शिफा कौन है
कुत्बे दीं एक तुम्हारे सिवा कौन है
तुमने मुर्दों को भी जिन्दगी बख्श दी
गम के मारों को तुमने खुशी बख्श दी
तीरगी दिल पे जब भी है छाने लगी
तुमने कुत्बे जहां रोशनी बख़्श दी
सुन लो मेरे भी दिल की पुकार
अल मदद अल मदद या मदार
अल अजल या मदारल्वरा अल अजल
अल वहा या मदारददोना अल वहा
नूरे ईमान और दीने हक़ की ज़िया
हमको जो कुछ मिला आप ही से मिला
इन्नका मुअतियुन व अना साएलुन
इन्नका मोहसिनुन व अना आसियुन
आप तो हैं सखी और इब्ने सखी

आप दाता हैं और हम भिकारी सभी
हम पे चश्मे करम एक बार
अल मदद अल मदद या मदार
मस्दरे सिलसिला हैं रसूले खुदा
किसकी जुरअत मिटाये जो यह सिलसिला
हिन्द में आप से दीं का गुलशन खिला
सबको ईमान तो आप ही से मिला
देखना मुन्किरों वह भी दिन आयेगा
सिलसिला इनका आलम में छा जायेगा
सच को मानेंगे सब झूट मिट जायेगा
अय मुनाफिक तू उस रोज पछतायेगा
तब कहेगा यही बार बार
अल मदद अल मदद या मदार
मुझ को दौलत न माल और न ज़र चाहिये
फ़क़्र के वास्ते तेरा दर चाहिये
कुत्बे दीं एक करम की नज़र चाहिये
मुझको रंजो अलम से मफ़र चाहिये
जिसको कुत्बे जहां तेरा दर मिल गया
उसको रंजो अलम से मफ़र मिल गया
'जिस पे कोई खिजां का असर ही न हो
उसको तकदीर से वह शजर मिल गया
मुझ शजर का है तुमपे मदार
अल मदद अल मदद या मदार

मनकबत मौला ए कायनात अली मुर्तजा रज़ि0

अली अली अली अली अली अली अली अली अली अली
अली अली अली अली अली अली
तुम्हारे नाम ही से अय शहा है हर बला टली अली अली अली
अली अली अली अली अली
रगों में खूने हाश्मी अली अली अली अली निराली शान आपकी
अली अली अली अली
है ये तो शाने हैदरी अली अली अली अली है ताज दारे हर वली
अली अली अली अली
खुदा के शेर हैं अली बड़े दिलेर हैं अली कभी किसी भी शख्स
से हुये न ज़ेर हैं अली
हर एक कांपने लगा नेआम से निकल पड़ी जो जुल्फुकारे
हैदरी अली अली अली अली
रसूले पाक शहरे इल्म और आप बाब हैं उलूमे मारफत्र के
आप ही तो आफताब हैं
अन्धेरे जिस से छट गये वह आप माहताब हैं मिली है
जिससे रोशनी अली अली अली अली
खुदा ही बस है जानता तुम्हारा जो है मरतबा नबी के नूरे ऐन
हो हो ताजदारे औलिया
हो तुम ही शाहे इन्सों जां हो तुम सभी के मुक़तदा हर एक बशर है

मुक्तदी अली अली अली अली
शऊर ही से काम लें जो पाये नाज थाम लें जो सर पे आयें
आफतें न क्यों तुम्हारा नाम लें
तुम्हारा नाम ले लिया जो ऐ हबीबे मुस्तफा तो हर बला है टल
गयी अली अली अली अली
चलीं हैं गम की आन्धयां कहां मिले इसे अमां बना अदू है
दो जहां अय गम गुसारे बेकसां
करम की इस पे हो नज़र तुम्हारे दर का अदना एक गुलाम है
शजर अली अली अली अली अली

★★★★★★★

मनाकिबे हुसैन अलैहिस्सलाम व मरासी

हर एक की आँखों से अयां है गमें शब्बीर
सदियों से हर एक दिल में निहां है ग़में शब्बीर
यह गम तो शजर मुझको विरासत में मिला है
सीने में छुपाए हुये माँ है ग़में शब्बीर

★★★★★★★

अय अली के जानशीं ज़हरा के जानी या हुसैन
जान दी पायी हयाते जावेदानी या हुसैन
कोई आलम में नहीं है तेरा सानी या हुसैन
और जन्नत में है तेरी हुकमरानी या हुसैन
है रसूले पाक की प्यारी निशानी या हुसैन
आप का बचपन बुढ़ापा और जवानी या हुसैन
तलख़िये माहौल हाथों पर है असग़र तशना लब
और आदा से तेरी शीरी बयानी या हुसैन
देखता सैलाब हूं तो मुझको आता है ख्याल
है तुम्हारी जुस्तुजू में अब भी पानी या हुसैन
कर रही है वक़्ते रुख़सत दीं की नुसरत का बयां
बा खुदा चेहरे की तेरी शादमानी या हुसैन
देख कर प्यासा तेरे घर बार को नहरे फुरात
क्यों न हो जाये हया से पानी पानी या हुसैन
सब्रे अय्यूबी न क्यूं नाज़ां शजर हो देख कर
तेरा कांधा और अकबर की जवानी या हुसैन

★★★★★★★

मदीने के वाली दो आलम के सरवर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
नहीं सब्र में कोई तेरे बराबर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
हो तुम शाफ़ए रोज़े महशर के दिलबर
हो तुम ही शहा वारिसे हौज़े कौसर
तुम्ही नाज़े जिन्नो मलक फख्रे हैदर
तुम्ही जन्नती नौजवानों के सरवर
हो तुम सब से आला हो तुम सबसे बेहतर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
लुटी पल में है उम्र भर की कमाई
कि जैनब के बच्चों ने जां है गंवायी
मगर फिर भी भाई से ज़ैनब यह बोली
अगर होते कुछ और बेटे तो भाई
मैं कर देती उनको भी तुम पर निछावर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
यही बाइसे नूरो इरफान होंगे
यही वजहे तहफीज़े कुरआन होंगे

यही जान देकर बचायेंगे दीं को
रहे हक में कर्बल में कुर्बान होंगे
ये औनो मुहम्मद यह कासिम यह अकबर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
तहारत दो आलम को है सदका जिनका
है ऊँचा हर एक फर्द से दरजा जिनका
दो आलम में मशहूर है पर्दा जिनका
न देखा था सूरज ने भी चेहरा जिनका
छिनी आज उनके सरों से है चादर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
सहूंगी भला कैसे दर्दे जुदायी
कहा रो के जैनब ने ऐ मेरे भाई
कहां मेरी तकदीर है मुझको लायी
कयामत से पहले क़यामत है आयी
यह है कौनसा इम्तिहां ऐ बिरादर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
थी आँखों में बिन्ते पयम्बर की मरकद
दमे आखरी सामने रब का जलवा

तसव्वुर में था तेरे नाना का रौजा
था दिल में मदीने की गलियों का नक्शा
बसा था निगाहों में तैबा का मनज़र
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
जमाने को दर्से वफा दे दिया है
पयामे रसूले खुदा दे दिया है
सलीका न था बनदगी का किसी को
सलीका इबादत का सिखला दिया है
शहा तुम ने सजदे में सर को कटा कर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर
चरागे शहे दीं बुझाने चले थे
घराना नबी का मिटाने चले थे
वो खुद मिट गये मिट न पाया तेर घर
मिटाने तुझे जो घराने चले थे
शजर अब भी बाकी है आले पयम्बर
हुसैन इब्ने हैदर हुसैन इब्ने हैदर

★★★★★★★

गम ख़ानए ज़ुल्मत को हो तन्वीर मुबारक
हो तुझको मेरे दिल गमे शब्बीर मुबारक
शब्बीर चले रन की तरफ सर को कटाने
हो ख़्वाबे बराहीम को ताबीर मुबारक
इस कैद ने आज़ादियां बख़्शी हैं जहां को
अय आबिदे बीमार हो ज़न्जीर मुबारक
अकबर की तरफ देखो अय अन्सारे हुसैनी
अल्लाह के नबी की है तस्वीर मुबारक
रानाइयां दुनिया की बनीं उनका मुकद्दर
शब्बीर तुम्हें खुल्द की जागीर मुबारक
कुर्बान हुये बेटे भी इस्लाम की ख़ातिर
यह ज़ख्म भी अय ज़ैनबे दिलगीर मुबारक
हूर नुसरते शब्बीर को मैदान में आये
अल्लाह ने बख़्शी है जो तक़दीर मुबारक
मौला ओ नबी तकते हैं जन्नत में तेरी राह
कौसर हो तुझे असगरे बेशीर मुबारक
शब्बीर पे वक्त आये तो कुर्बान करो जां
कासिम तुम्हें शब्बर की हो तहरीर मुबारक

मकतल की तरफ कहके ये शब्बीर चले हैं
अब काफ़िला सालारी हो हमशीर मुबारक
कुर्बानी का जज़्बा है शजर अपने भी दिल में
हो खूने अली की तुझे तासीर मुबारक

★★★★★★★

सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर

तुमने लुटाया दीं पे भरा घर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
वादा किया जो उसको निभाना
ज़ुल्म के आगे सर न झुकाना
अज़मते क़ाबा घटने न पाये
चाहे पड़े घर अपना लुटाना
ख्वाब में बोले नाना ये आकर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
हाथ के बदले में मिले पानी
जो है नबी की पाक निशानी
बोले ये आका हाथ में मेरे
कौसरो जमजम की है रवानी
हाथ बचाया सर को कटा कर

सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
लौट के भाई भी नहीं आया
सर से उठा है बाप का साया
तैबा में सुगरा भी न मिलेगी
बहेन को भी वह देख न पाया
रह गया तन्हा आबिदे मुज़तर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
कहने लगी है सुगरा ये रो कर
फूफी नहीं हैं और न असग़र
बाबा गये है जानिबे करबल
सारा घराना साथ में ले कर
हो गया सूना हाय मेरा घर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
बोली सकीना प्यास लगी है
नहर भी बिल्कुल पास लगी है
कोई नहीं अब पानी जो लाये
आप से बाबा आस लगी है
आयी है मेरी जान लबों पर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
सब्र किया है जुल्म सहे हैं
हाय वो बच्चे काँप रहे हैं
जिनके फरिश्ते नाज उठायें

खून के आँसू उनके बहे हैं
खाया किसी ने तर्स न उन पर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
देने सलामी कब्रे नबी पर
पहुंचे अदब से ज़हरा के दिलबर
बाद में कब्रे बिन्ते नबी पर
रो के यह बोले वारिसे कौसर
अब न मदीने आयेंगे मादर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
तुझ को अय सुगरा सब्र खुदा दे
दर्द बढ़ा है कौन दवा दे
दिल की तमन्ना रह गयी दिल में
ख़ालिको मालिक इस का सिला दे
रुह न निकली दस्ते शहा पर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर
हश्र में भी एक हश्र बपा है
खल्के खुदा सब काँप रही है
हाथ में ले कर खून के कपड़े
बच्चों का हक मांग रही है
फ़ात्मा ज़हरा बिन्ते पयम्बर
सिब्ते पयम्बर सिब्ते पयम्बर

बढ़ने दो गमें इश्के हुसैन और जियादा
पाने दो मेरे कल्ब को चैन और जियादा
याद आयेगा जब खून शहीदाने वफा का
तब अश्क बहायेंगे ये नैन और जियादा
दिखलाये जो शब्बीर ने शमशीर के जौहर
याद आये शहे बदरो हुनैन और जियादा
पाबन्दी गमें शह पे जो मुन्किर ने लगायी
उश्शाक हैं करने लगे बैन और जियादा
दिन भर के मज़ालिम के मनाजिर थे नजर में
जैनब के लिये बढ़ गयी रैन और जियादा
कटवायेंगे शब्बीर जो सर करबो बला में
इस्लाम की बढ़ जायेगी जैन और जियादा
अय काश शजर को मिले तौफीक खुदा से
करता ही रहे जिक्रे हुसैन और जियादा

★★★★★★★

बे घरों पर जुल्म की है इन्तिहा परदेस है
और आले मुस्तफ़ा बे आसरा परदेस है
देस की मिट्टी बहुत आले नबी से दूर है
उनका हामी कौन है परदेस में मजबूर है

जुल्म जितना भी करे जालिम इन्हें मन्जूर है
छूट पायेगा न दामन सब्र का परदेस है
हर कदम पर मुश्किलें हैं हर कदम पर इम्तिहां
यह नबी की आल को तकदीर है लायी कहां
जल गये खेमें हैं सब और लुट गया है आशियां
अब कहां जायेगी आले मुस्तफा परदेस है
प्यास की शिद्दत बढ़ी है असगरे मासूम को
तीन दिन से मिल सका पानी न इस मजलूम को
तीरों से छलनी न कर मासूम के हलकूम को
कर न जख्मी तू ये नन्हां सा गला परदेस है
हजरते असगर ने ये शह को लिखा सन्देस में
लुत्फ आता ही नहीं जीने का अब तो देस में
जब से बाबा तुम गये हो देस से परदेस में
देस अपना वाकई लगने लगा परदेस है
है बहत्तर सिर्फ हम फौजे अदू लाखों में है
एक दूजे से जुदा होने का डर आँखों में है
सल्तनत मुस्लिम नुमा कुफ्फार के हाथों में है
अल मदद मौला अली मुश्किल कुशा परदेस है
अय खुदा रह में तेरी घर बार को कुर्बां किया
आसियों के वास्ते बखशिश का है सामां किया

उम्मते सरकार पर इतना बड़ा एहसां किया
आखरी करते हैं शह सजदा अदा परदेस है
शम्अे हक पर है किया कुर्बा भरे घर बार को
कर दिया शादाब तूने दीन के गुलजार को
तोड़ डाली सब्र से है जब्र की तलवार को
है हंसी शब्बीर तेरी हर अदा परदेस है
है यही इज्जत भी तेरी है यही दौलत तेरी
तेरे दिल में है मुहब्बत अहले बैते पाक की
है गमे शब्बीर ही तेरे लिये वज्हे खुशी
अय शजर दिल में इसे ले तू छुपा परदेस है

★★★★★★★

वला तकूलू लेमई युकतलू फी सबीलिल्लाहि अमवात बल अहया
जो राहे हक में फिदा हो उसको कहो न तुम मुर्दा है वो जिन्दा
निसार जो दीने हक़ पे होगे तो होंगे हर दो जहां तुम्हारे
जो दीन पर जां निसार कर दे उसी के है खुल्द के नजारे
तुम्हारे कदमों का बोसा लेंगे यह धरती अम्बर ये चाँद तारे
तुम्ही बनोगे फलक के सूरज तुम्ही बनोगे नूर आँखों का
वला तकूलू लिमई युकतलू फी सबीलिल्लाहि अमवात बल अहया
नजर में ईसारे करबला हो मोहब्बते सिब्ते मुस्तफा हो

दिलों में हो खौफ किब्रिया का खुदा के आगे यह सर झुका हो
हो अहले बैते नबी की उल्फत न क्यों वो दुनिया का मुकतदा हो
उसी की दुनिया उसी की उकबा जो दिल से मौला का है शैदा
वला तकूलू लिमई युकतलू फी सबीलिल्लाहि अमवात बल अहया
हुसैन ने अपना सर कटा कर है दीने इस्लाम को बचाया
वो दीं का हम को सबक सिखाया कि खुल्द का रास्ता दिखाया
तुम्हारे जैसा ऐ मेरे आका जहां में है दूसरा न आया
तुम्हारे सदके में दीं का सूरज है आज भी रौशन ताबिन्दा
वला तकूलू लिमई युकतलू फी सबीलिल्लाहि अमवात बल अहया
लुटे यह घर कोई डर नहीं है कटे यह गर्दन खतर नहीं है
जहां में दूजा हुसैन इब्ने अली सा शेरे बबर नहीं है
यजीदियों के जो आगे खम हो हुसैन का ऐसा सर नहीं है
यह सर है वह जिसको बारहा सरवरे दो आलम ने है चूमा
वला तकूलू लिमई युकतलू फी सबीलिल्लाहि अमवात बल अहया
यज़ीदियों कुछ तो शर्म खाओ नबी की इतरत को मत सताओ
न अकबरे बे नवा को मारो न तीर हलकूम पर चलाओ
न रौंदों घोड़ों से उनकी लाशें न ख़ेमें मज़लूम के जलाओ
दिखाओगे कैसे हश्र के दिन नबी ए अकरम को तुम चेहरा
वला तकूलू लिमई युकतलू फी सबीलिल्लाहि अमवात बल अहया
सवारे दोशे नबी शहा हैं अन्धेरों में रोशनी शहा हैं

परिन्दों की नग़मगीं शहा हैं है चाँद अली चाँदनी शहा हैं
है जिससे सैराब दोनों आलम वो फ़ैज़ की इक नदी शहा हैं
नबी शहा से शहा नबी से नबी ए अकरम का है कहना
वला तकूलू लिमई युकतलू फी सबीलिल्लाहि अमवात बल अहया
शजर है तकदीर से हुसैनी है खूं में आका का खून शामिल
भरी है सीने में उनकी उलफत है नाज़े कौनैन यह मेरा दिल
सफीनए इश्क को यकीनन मिलेगा इक दिन ज़रूर साहिल
मुझे यकीं है शहा दिखाऐंगे नूरी वो चेहरा
वला तकूलू लिमई युकतलू फी सबीलिल्लाहि अमवात बल अहया

★★★★★★★

तुम हो ज़हरा के जिगर पारे हो तुम नूरे नबी
या हुसैन इब्ने अली या हुसैन इब्ने अली
नूरे हक़ नूरे अज़ल शम्अे शबिस्ताने अरब
शाहे दीं शाहे मुबीं शाहे शहीदाने अरब
हो अरब या हो अजम धूम है हर सिम्त तेरी
या हुसैन इब्ने अली या हुसैन इब्ने अली
फिर से हर सिम्त अन्धेरों की घटा छाई है
चार सू आदा की यलग़ार है तन्हायी है

फिर से आवाज तुझे देती है ये आल तेरी
या हुसैन इब्ने अली या हुसैन इब्ने अली
दूर हूं तुम से अगर गम नहीं करना सुगरा
अश्क बरसाना नहीं आहें न भरना सुगरा
कितना नजदीक है घर से तेरे दरबारे नबी
या हुसैन इब्ने अली या हुसैन इब्ने अली
सुन्न्ते सरवरे आलम का पता है यारो
करबला खाक नशीनों की जगह है यारो
इन्किसारी की अदा हम को इसी जा से मिली
या हुसैन इब्ने अली या हुसैन इब्ने अली
जुल्म के बाब जो करबल में हैं मफ़्तूह हुये
आले सरकार के जब जिस्म हैं मज्रूह हुये
आज बेचैन है तैबा में बहोत रूहे नबी
या हुसैन इब्ने अली या हुसैन इब्ने अली
उम्मती आयेगें पीने वो पिलाने के लिये
तब लई तरसेंगे उस जुमरे में आने के लिये
जब सबील होगी सरे हश्र तेरी कौसर की
या हुसैन इब्ने अली या हुसैन इब्ने अली
कोई मोनिस कोई गमख्वार नहीं हो सकता
आपसा अय मेरे सरकार नहीं हो सकता
इस शजर पे भी हो सरकार नजर रहमत की
या हुसैन इब्ने अली या हुसैन इब्ने अली

सीने में लिये जज़्बए तामीर चले हैं
करबल की तरफ हज़रते शब्बीर चले हैं
इक सिम्त से अल्लाह का महबूब चला है
इक सिम्त से तलवार चले तीर चले है
सहमें हैं गुलिस्तान हर एक फूल है मायूस
असगर के कलेजे पे कई तीर चले हैं
क्यों लरज़ाँ बर अनदाम न हो फौजे यज़ीदी
अब रन की तरफ शह लिये शमशीर चले हैं
अय दोस्तो आज़ादिये इस्लाम की खातिर
सज्जाद लिये पांव में ज़ंजीर चले हैं
दुनिया की हर एक शय को शजर छोड़ के शब्बीर
अब देखने को खुल्द की जागीर चले हैं

हबीबे शाफ़ए महशर का नाम है शब्बीर
फिदाये साहबे कौसर का नाम है शब्बीर
रजा ए खालिक अकबर का नाम है शब्बीर
वकारे दीन पयम्बर का नाम है शब्बीर
शुजाए फातहे खैबर का नाम है शब्बीर
सवारे दोशे पयम्बर का नाम है शब्बीर

जो पूछा हमसे नकीरैन ने तो हम बोले
हमारे आका का सरवर का नाम है शब्बीर
सेराते हक से भटकने का हम को खौफ़ नहीं
हमारी राहों के रहबर का नाम है शब्बीर
उन्ही ने दीन बचाया है जान को दे कर
कतीले दीने पयम्बर का नाम है शब्बीर
दिलो निगाह में जिसकी थी अजमते काबा
शजर एक ऐसे दिलावर का नाम है शब्बीर

याद आयी करबला हम को तो हम रोने लगे
एक हम क्या हूरो गिलमाने इरम रोने लगे
बाजुए अब्बास अकबर का गला आका का सर
लिखते लिखते खून का क़िस्सा क़लम रोने लगे
फर्ते गम से जब अली अकबर को रोना आ गया
ऐसा लगता था नबी ए मोहतरम रोने लगे
जब सुनायी हमने उनको दास्ताने करबला
क्या है जिक्र इन्सां का पत्थर के सनम रोने लगे
पढ़के ख़त में हज़रते सुग़रा की बीमारी का हाल
बादशाहे करबला बा चश्मे नम रोने लगे
करबला में सब उजड़ जायेगा ज़हरा का चमन
जब कहा जिब्रील ने शाहे उमम रोने लगे

जब अली का फूल असगर प्यास से बेकल हुआ
देख कर उसको गुलिस्ताने इरम रोने लगे
मरसिया लिखने जो बैठे करबला का हम शजर
सोच कर बये गये जुल्मो सितम रोने लगे

मनकबत ब बारगाहे सैयदना गौसे आजम दस्तगीर रजि0

तेरा रुतबा सिवा है गौसे आजम
तू महबूबे खुदा है गौसे आजम
कभी शैतां न होगा इसमें दाखिल
मेरे दिल पर लिखा है गौसे आजम
खुदा का मुददआ मेरे नबी हैं
नबी का मुददआ हैं गौसे आजम
विलायत चूमती है तेरे तलवे
तेरा वो मरतबा है गौसे आजम
यकायक आगये बगदादी आका
मदद को जब कहा है गौसे आजम
तमाजत का शजर को क्यों हो खतरा
तेरी सर पे रिदा है गौसे आजम

मनकबत ब बारगाहे सरकारे ग़रीब नवाज़ रज़ि0

उठी निगाहे करम जब तेरी ग़रीब नवाज
झुकी हर एक नजर गैज़ की ग़रीब नवाज़
तुम्हारे दादा हैं मौला अली ग़रीब नवाज़
सखी हो और हो इब्ने सखी ग़रीब नवाज़
तेरी महक ने ही महकाया हिन्द का गुलशन
चिटख के कहने लगी हर कली ग़रीब नवाज़
हमें तो लगती है जन्नत की हो गली जैसे
तुम्हारे शहर की हर एक गली ग़रीब नवाज़
हजारों जान निछावर हों तेरे कदमों पर
तेरी रगों में है खूने अली ग़रीब नवाज़
मदार पाक की अजमेर में निशानी है
मदार चिल्ला सड़क टीकरी ग़रीब नवाज़
शजर ने पायी है खालिस मदारिया निस्बत
न क्यों हो इसको अकीदत तेरी ग़रीब नवाज़

मनकबत ब बारगाहे सरकार कुतुब गौरी कोलार शरीफ कर्नाटक

कुत्बे जहां के सदके सरकार कुत्बे गौरी
चश्मे करम उठा दो इक बार कुत्बे गौरी
इश्के मदार से है सरशार कुत्बे गौरी
दिल में बसा है मुर्शिद का प्यार कुत्बे गौरी
बहकायेंगे हमें क्या अग़यार कुत्बे गौरी
तुमने ही आके जामे इश्के नबी पिलाया
प्यासा रहा है सदियों कोलार कुत्बे गौरी
हिन्दोस्तां की धरती पर आपके ही सदके
इस्लाम के हैं बिखरे अन्वार कुत्बे गौरी
तबलीगे दीं की खातिर घूमा तेरा जनाज़ा
कदमों में हो न क्यों कर सन्सार कुत्बे गौरी
बेदाम मिल रही है इश्के नबी की दौलत
कितना हंसीं है तेरा बाजार कुत्बे गौरी
मैं आस्तां पे जौक़े दीदार ले के आया
हो जाये ख्वाब में ही दीदार कुत्बे गौरी
हर शख्स अय शजर है दामन यहां पसारे
मजबूर है यह दुनिया मुख्तार कुत्बे गौरी

मनक़बते सैयद अली मदारी

रह0 कल्कत्ता

चम चम चमके तेरा रौज़ा सैय्यद अली
नूर है तेरे उर्स में बिखरा सैय्यद अली
मौला अली की आँख का तारा सैय्यद अली
है हसनैन के दिल के टुकड़ा सैय्यद अली
कहता है हर एक बशर तेरे सदके
बंटता है हसनैन का सदका सैय्यद अली
हक है यही बंगाल की धरती पर फैला
दीने नबी का तुमसे उजाला सैय्यद अली
मेरी माने आपके दर पर आ जाये
देखना हो जिसको भी तैबा सैय्यद अली
अहले नजर हैं देखते तेरे गुम्बद से
अक्से जमाले गुम्बदे खजरा सैय्यद अली
आपके सदके में बंगाल की धरती पर
बजता है इस्लाम का डंका सैय्यद अली
तेरे आका कुत्बे जहां का रौजा भी
लगता है जैसे हो काबा सैय्यद अली

मनक़बत हज़रत सैयद ज़हीरुल मुनइम बब्बन भाई जी मियां मदारी

चेहरे से फूटते हुये अनवार भाई जी
कहते है तुम हो वारिसे सरकार भाई जी
किरदारे अली उसमें नजर आने लगा जब
देखा है हमने आपका किरदार भाई जी
ये दिल की तमन्ना है मेरे ख्वाब में आकर
चेहरा ही दिखा दे मुझे एक बार भाई जी
कुछ ख़ौफ न था मौत का चेहरे पे आप के
मिलने को अपने रब से थे तैयार भाई जी
अब इनको नकीरैन गिरफ्तार क्या करें
हैं इश्क में आका के गिरफ्तार भाई जी
क्यों हश्र की गर्मी से मुरीद आपके डरें
जब आप दो जहां में हैं गमख्वार भाई जी
सूए शजर भी एक निगाहे करम हुजूर
ये आपसे रखता है बहुत प्यार भाई जी

अल विदा ऐ माहे रमज़ाँ अलविदा

ऐ ख़ुदा के पाक महमां अलविदा
अल विदा ऐ माहे रमज़ाँ अलविदा
तुझमें ही नाजिल हुआ कुर्आन है
चन्द ही दिन का अब तू महमान है
कर रहे है जिन्न व इन्सां अलविदा
अल विदा ऐ माहे रमज़ाँ अलविदा
खुलते हैं इस माह में जन्नत के दर
बन्द हो जाते हैं अबवाबे सकर
कैद हो जाता है शैतां अलविदा
अल विदा ऐ माहे रमज़ाँ अलविदा
रब करम फरमाता है इस माह में
रिज्क भी बढ़ जाता है इस माह में
मुश्किलें होती हैं आसां अलविदा
अल विदा ऐ माहे रमज़ाँ अलविदा
हिज्र से है गमजदा हर रोजा दार
छोड़ कर जाती है अब फसले बहार
गमजदा है हर गुलिस्तां अलविदा
अल विदा ऐ माहे रमज़ाँ अलविदा
दूर करक हम को हर आजार से
मगफिरत से रहमतो अनवार से
जा रहा है भर के दामां अलविदा
अल विदा ऐ माहे रमज़ाँ अलविदा

★★★★★★★

शाह भी उनके दरबार में बिक गए
जो मदीने के बाज़ार में बिक गए
कोई अन्दाज़ा क़ीमत का क्या कर सके
हम तो जा कर दरे यार में बिक गए
ग़ौसो अक़ताबो अफ़रादो अबदाल सब
जो गए तेरे दरबार में बिक गए
छा गई हर तरफ़ जिस घड़ी नफ़रतें
या नबी हम तेरे प्यार में बिक गए
मुफ़्ती तौहीने कब्रे रिसालत करे
जो थे अपने वह अग़यार में बिक गए
शह ने सब्रो तहम्मुल ख़ुदा से लिया
और लईं तीरो तलवार में बिक गए
हों वह सिद्दीक़ो फ़ारूक़ो उस्माँ अली
तेरे चेहरे के अनवार में बिक गए
जिसको ख़तरा नहीं है ख़िज़ां का कभी
हम शजर ऐसे गुलज़ार में बिक गए
अहसना मिनका हस्सान ने जब कहा
हम शजर उनके अशआर में बिक गए

नाम तेरा है जपता हो कोई ख़ादिम या मख़दूम
मेरे नबी की धूम है हर सू मेरे नबी की धूम
तेरा जलवा बसा है निगाहों में तेरी ख़ुश्बू बसी है हवाओं में
तू है कोयल की हर तानों में तू है हर जुगनू की अदाओं में
तू है हर मोमिन की सांसों में तू है हर सूफ़ी की निगाहों में
जन्नत के पत्ते पत्ते पर है नामे नबी मरकूम
मेरे नबी की धूम है हर सू मेरे नबी की धूम
तौरेतो ज़ुबूर इन्जील में भी क़ुरआन के सारे पारों में
वेदों में और पुराणों में हर मज़हब के आचारों में
अशआर में और तक़रीरों में और दीवानों के नारों में
हर बात के तुम ही माख़ज़ हो हर क़ौल के हो मफ़हूम
मेरे नबी की धूम है हर सू मेरे नबी की धूम
बग़दादे मुअल्ला हो या हो अजमेर की धरती या कलियर
हो चाहे नजफ़ अशरफ़ करबल किसरा की ज़मीं हो या ख़ैबर
हो अर्ज़े मकनपुर या देवा हो चाहे कछौछा या सन्जर
वो चीन हो या जापान हो हो फ़ारस या हो रूम
मेरे नबी की धूम है हर सू मेरे नबी की धूम
मेराज को पहुंचे मेरे नबी अक़सा में इमामत फ़रमाई
जन्नत देखी दोज़ख़ देखी नबियों की क़यादत फ़रमाई
रफ़रफ़ ठहरा जिब्रील रुके सिदरा की है जब मंज़िल आई
सिदरा से भी आगे क्या है भला जिब्रील को क्या मालूम
मेरे नबी की धूम है हर सू मेरे नबी की धूम
मख़दूमे अशरफ़ से पूछो मस्जिद के मनारों से पूछो

शह दाना से शह मीना से वलियों की मज़ारों से पूछो
खम्बात के साहिल से पूछो नदियों की धारों से पूछो
फ़ैज़ाने मदारी से अय शजर है कौन भला महरूम
मेरे नबी की धूम है हर सू मेरे नबी की धूम
अब्बास का बाज़ू हो या हो अकबर का वह कड़यल ला
बातिल के सामने कहता है सरकारे दो आलम का कुन्बा
क़ासिम की शहादत कहती है और हुर का कहता है जज़्बा
मुस्लिम नुमा काफ़िर से बोला यह असग़र का हुलकूम
मेरे नबी की धूम है हर सू मेरे नबी की धूम

★★★★★★★

वह रब के नबी सब के ग़म ख़्वार बचाएंगे
हम सब को सरे महशर सरकार बचाएंगे
सरकार की आमद है पूंछो यह नसारा से
किस तरह से किसरा की दीवार बचाएंगे
सिद्दीक़ो उमर उसमां और मौला अली मिलकर
इस्लामो शरीअत का मेयार बचाएंगे
घर बार लुटा कर और सर दे के सरे कर्बल
अब दीन को जन्नत के सरदार बचाएंगे
सरकार के गुलशन के फूलों से हुई निस्बत
खुद हम से शजर दामन अब ख़ार बचाएंगे
★★★★★★★

जब ज़ुल्म के बादल छाने लगे गुलशन के गुल कुम्हलाने लगे
इन्सान जब अपनी बच्ची को हैं जीते जी दफ़नाने लगे
हर सिम्त जफ़ाओ ज़ुल्म का जब है गर्म हुआ बाज़ार
मुहम्मद आ गए मुहम्मद आ गए
अब कोई भी अपनी बेटी को क्यों जीते जी दफ़नायेगा
बेटे की गर्दन पर कोई तलवार न बाप चलायेगा
हर शख़्स का दिल बदलेगा अब हर फ़र्द हिदायत पायेगा
दरबार लगेगा आक़ा का इन्साफ़ यक़ीनन पायेगा
सच्चाई और इन्साफ़ का लगने वाला है दरबार
मुहम्मद आ गए मुहम्मद आ गए
यह जब्र के शोले अब्रे इख़्लास से सब बुझ जायेंगे
सब कलियां लोरी गायेंगी गुलशन के गुल मुस्काएंगे
हर सिम्त उजाले बिखरेंगे सब ज़ुल्मो सितम मिट जायेंगे
जब आमिना बी की गोदी में सरकारे मदीना आयेंगे
तब झूम झूम के मस्ती में यह बोलेगा संसार
मुहम्मद आ गए मुहम्मद आ गए
अब होगा वफ़ा हर एक वादा ईमान की और ख़ुद्दारी की
अब धूम दो आलम में होगी हर सिम्त अमानत दारी की
हो जायेगी ख़ामोश ज़बां अय्यारी और मक्कारी की
अब गूंज दो आलम में होगी हर सू फ़रमां बरदारी की
माँ बाप के अब हो जायंगे बच्चे फ़रमां बरदार
मुहम्मद आ गए मुहम्मद आ गए
आदम की लग़ज़िश को रब ने जिसके सदक़े में बख़्श दिया

मछली के पेट से यूनुस को जिसके सदक़े आज़ाद किया
ईसा ने जिसकी उम्मत में पैदा होने का अज़्म किया
और इब्राहीम ने ख़्वाहिश की तो रब ने उन्हे यह मुज़दा दिया
वह देखो अब्दुल्ला के घर सब नबियों के सरदार
मुहम्मद आ गए मुहम्मद आ गए
बुत ख़ाने सारे कांप उठे काबे के सनम थर्राने लगे
अब कुफ्र की जुल्मत ख़त्म हुई दुनिया से अन्धेरे जाने लगे
तौहीद की किरणें फूट पड़ीं ईमां के उजाले छाने लगे
जब आमिना बी की गोदी में सरकार मदीना आने लगे
थर्रा कर लोगों बोल उठी है ये किसरा की दीवार
मुहम्मद आ गए मुहम्मद आ गए
कोई कमज़ोर नहीं होगा हर एक जरीयो क़वी होगा
आकर इस्लाम के दामन में मोमिन होगा या वली होगा
वो आके विलायत बाटेंगे सब नबियों के सरदार हैं जो
कोई सिद्दीको उमर होगा कोई उस्मानो अली होगा
अब बदलेगी सारी दुनिया अब बदलेगा संसार
मुहम्मद आ गए मुहम्मद आ गए
जब कोई परेशानी आई तकलीफ़ मे जब भी आया मैं
इस आलमें हस्ती में लोगो गर कोई कभी दुख पाया मैं
ग़म ने है मुझे जब भी घेरा दुख दर्द से जब टकराया मैं
जब भी कोई तकलीफ़ पड़ी जिस वक़्त शजर घबराया मैं
मीलाद मना ली आक़ा की उस वक़्त मेरे ग़मख़्वार
मुहम्मद आ गए मुहम्मद आ गए
****

चले हो जाएरे खैरुल वरा मदीने में
हमारे हक़ में भी करना दुआ मदीने में
दरे रसूले मुअज़्ज़म पे हाज़िरी के लिए
फ़रिश्ते आते हैं सुब्हो मसा मदीने में
वहां का तुर्श भी शीरो शकर से बेहतर है
किसी भी शय को न कहना बुरा मदीने में
अदब से सांस भी लेते हैं बायज़ीदो जुनैद
है जलवा फरमा शहे अम्बिया मदीने में
इसी मदीने को सब कहते यसरिबो बतहा
जो होते तुम न रसूल खुदा मदीने में
ऐ नूर वाले फक़त आप ही का है एजाज़
जो चार सिम्त अजब है ज़िया मदीने में
कोई भी इसका लगा सकता नहीं अन्दाज़ा
जो नेकियों का है मिलता सिला मदीने में
ऐ शहे आली मक़ाम अस्सलातु वस्सलाम
ऐ शहीदों के इमाम अस्सलातु वस्सलाम
आपकी ताज़ीम कुरआं ने हमें सिखलाई है
काबिले सद एहतेराम अस्सलातु वस्सलाम
वाह बातिल के न हाथों में दिया है तू ने हाथ
जान दे दी हक़ के नाम अस्सलातु वस्सलाम
आप पर रो रो के भेजा याद आई जिस घड़ी
कर्बला की हमको शाम अस्सलातु वस्सलाम
ऐ शहीदे कर्बला इनके भी दामन को भरो
कह रहे हैं यह ग़ुलाम अस्सलातु वस्सलाम
इस जहां में ही नहीं महशर के दिन भी बोलेंगे

पी के सब कौसर का जाम अस्सलातु वस्सलाम
भेजते हैं दोस्त क्या दुश्मन भी अत तहिय्यात में
आले पयम्बर के नाम अस्सलातु वस्सलाम
फ़ख़ है कि दीं के ख़ातिर तीर खाकर हो गए
हज़रते असग़र तमाम अस्सलातु वस्सलाम
कर्बला ही क्या ज़मीं के ज़र्रे ज़र्रे आप पर
भेजते हैं सुब्हो शाम अस्सलातु वस्सलाम
जब पढ़ी दिल से है जिसने दास्ताने कर्बला
बोल उठे सब ख़ासो आम अस्सलातु वस्सलाम
हज़रते सुग़रा, सकीना, ज़ैनबो उम्मे रुबाब
इतरते ख़ैरुल अनाम अस्सलातु वस्सलाम
हज़रते सुग़रा का सारा घर चला है कर्बला
कह रहे हैं दर व बाम अस्सलातु वस्सलाम
है शजर की इल्तजा देखे यह जाकर के कभी
कर्बला की सुब्हो शाम अस्सलातु वस्सलाम

याद आ गये हैं हैदरे कर्रार या हुसैन
जिस दम उठायी आप ने तलवार या हुसैन
दुनिया में बस उसी का है मेयार या हुसैन
उल्फ़त में जो है आपकी सरशार या हुसैन
दुश्मन हुए हैं बर सरे पैकार या हुसैन
चश्मे करम है आपकी दरकार या हुसैन
अहले निगाह कहते हैं आलम में हर तरफ़
बिखरे हुए हैं आपके अनवार या हुसैन
जिस पर वफ़ा को नाज़ रहेगा अबद तलक
इतने अज़ीम हैं तेरे अन्सार या हुसैन

हर फ़र्द की ज़बान पे होगा तुम्हारा नाम
इक दिन पुकारेंगे दरो दीवार या हुसैन
अल्लाह ने किया तुम्हें बे मिस्लो बे मिसाल
जन्नत के नौजवानों के सरदार या हुसैन
यह भी करम है आपका माँ की है ये दुआ
देखा शजर ने है तेरा दरबार या हुसैन

★★★★★★★

तेरे दर से ख़ाली लौटा कोई आदमी नहीं है
तेरे जैसा सारी दुनिया में कोई सख़ी नहीं है
कभी उसके दिल में दाख़िल नहीं होता नूरे ईमां
तेरा इश्क़ जिसके सीने में मेरे नबी नहीं है
तू ही मेरे ग़म का दरमां तुम्हीं मेरे दिल की तसकीं
ऐ मेरे रसूल दुनिया में मेरा कोई नहीं है
तेरी शान अल्लाह अल्लाह ऐ मेरे नबी ए अकरम
वह कोई नबी नहीं जो तेरा मुक़तदी नहीं है
है हुसैन मेरा आक़ा है हुसैन मेरा मौला
जो हुसैन का नहीं है वह ख़ुदा का भी नहीं है
तू ही नूर का है पैकर तू ही रश्के तूर आक़ा
जो ज़िया न तुझसे पाए कोई रोश्नी नहीं है

★★★★★★★

ज़मीं पर कोई भी सब्ज़ा कभी पैदा नहीं होता
नबी के सब्ज़ गुम्बद का अगर सदक़ा नहीं होता

न होते चाँद और तारे न सूरज की किरण होती
सरापा नूर हैं जो उनका गर जलवा नहीं होता
वहां से लौट कर हर लम्हा बस यह फ़िक्र रहती है
दरे सरकार से ऐ काश मैं लौटा नहीं होता
जबीं चौखट पे रख के कहता है दीवाना आक़ा का
अगर आक़ा नहीं होते कोई सजदा नहीं होता
तपिश से धूप की जलती सरे महशर तेरी उम्मत
अगर उम्मत पे दामन का तेरे साया नहीं होता
क़यामत तक नहीं होता कुबूले हक़ कोई सजदा
अगर शब्बीर का वह आख़िरी सजदा नहीं होता
हमारी मग़फ़िरत के वास्ते गर तुम नहीं होते
हमें दोज़ख़ से बचने का कोई रस्ता नहीं होता
शजर कुछ भी नहीं होता गुनाहों के सिवा बाक़ी
मेरा दिल गर मेरे सरकार पर शैदा नहीं होता

★★★★★★★

खुदा या मेरी आरज़ू है कि बीते मेरी उम्र नातें सुनाते सुनाते
मरूं इश्के अहमद को सीने में लेके उठूं क़ब्र में गीत आक़ा के गाते
कभी उठ के आजाइये मेरे आक़ा मदीने से खुशियों की बारात ले कर
कि इक उम्र बीती है ग़मख़्वारे आलम मुझे बोझ ग़म का उठाते उठाते
दो आलम के जितने भी सजदे हों लाओ मगर उसकी कोई न तमसील होगी
जो सजदा किया मेरे शब्बीर ने है सरे करबला सर कटाते कटाते
उमर ले के तलवार हैं साथ उनके हुए आज हैरां यह कुफ्फार सुन के
तो क्यूं मुशरिकीं ख़ौफ से रुक न जाएं हबीबे खुदा को सताते सताते
उस अन्दाज़ से जैसे पहुंचे थे जामी किसी दिन हमारी हो आक़ा सलामी
किसी दिन मदीने पहुंच जाऊं आक़ा हर इक से मैं खुद को छुपाते छुपाते

तेरी ऐ शजर पूरी होगी तमन्ना दिखाएंगे तुझ को भी आक़ा मदीना
तुझे हो ही जाएगा दीदारे तैबा ग़मे शह में आंसू बहाते बहाते

★★★★★★★

वजहे शक्कुल क़मर फ़ख़्रे जिन्नो बशर ऐ शहे कुन फ़कां तुम कहां हम कहां
हम हैं मुहताज और तुम हो मुख़्तारे कुल मोनिसे बे कसां तुम कहां हम कहां
तुम शफ़ी और हम सब गुनह गार हैं तुम हो मतलूब और हम तलबगार हैं
तुम तो साक़ी हो कौसर के हम तिश्ना लब शाफ़ए आसियां तुम कहां हम कहां
हम तो ख़ाकी हैं तुम नूर ही नूर हो दोनों आलम में हर सिम्त मशहूर हो
आसमानी किताबों में मज़कूर हो नाज़िशे ज़ाकिरां तुम कहां हम कहां
रब ने हम को यह कहके कुलू बशरबू है बनाया ज़मीनो ज़मां के लिए
और बनाए खुदा ने तुम्हारे लिए यह ज़मीनो ज़मां तुम कहां हम कहां
तुम ही तो सारे आलम के मख़दूम हो हर बशर क्यूं तुम्हारा न महकूम हो
हम सरापा ख़ता तुम तो मासूम हो फ़ख़्रे पैग़म्बरां तुम कहां हम कहां
अर्श हो फ़र्श हो या तहतुस सरा राज़ आलम का कोई न तुमसे छुपा
और हमारी है आँखों पे परदा पड़ा राज़ के राज़दां तुम कहां हम कहां
हम जो चाहें मिले बे ज़बां को ज़बां ऐसा वल्लाह बिल्कुल भी मुमकिन नहीं
तुम जो चाहो तो पल भर में मिल जाती है पत्थरों को ज़बां तुम कहां हम कहां
मेरे सरकार तुम तो हो हय्युन्नबी और हम ख़ाक हो जाने वाले सभी
जाने तख़लीक़ वल्लाह मख़लूक़ के तुम हो रूहे रवां तुम कहां हम कहां

★★★★★★★

लब पे शम्सुज़्ज़ुहा के तबस्सुम खिला दहर में हर तरफ़ रोशनी छा गई
हैं फ़िज़ाएं मुअत्तर मुअत्तर हुईं ज़ुल्फ़े वल्लैल जिस दम है लहरा गई
हश्र के रोज़ पास अपने कुछ भी न था नेमते मदहे ख़ैरुल वरा के सिवा
बढ़ के रहमत ने आग़ोश में ले लिया नाते सरकार महशर में काम आ गई

रेत पर जलवा फरमा थे बदुरुद दुजा आपके गिर्द झुर्मुट था असहाब का
रात दिन की तरह जगमगाने लगी चाँदनी उनके तलवों से शरमा गई
संग रेज़ों ने मुट्ठी में कलमा पढ़ा और तेरी उंगलियों से है चश्मा बहा
डूबा सूरज उगा चाँद टुकड़े हुआ तेरी खुश्बू दो आलम को महका गई
आ गए इस जहां में हैं जाने जहां अब गुज़र होगा तेरा न फसले खिज़ां
फूल मुस्का दिये चिटख़ी हर एक कली और गुलिस्तां में फसले बहार आ गई
किस कदर फ़ज़्ल है तुझ पे अल्लाह का हर कोई मस्त है अर्ज़े तैबा तेरा
हूक उट्ठी शजर दिल तड़पने लगा ऐ मदीना तेरी जब भी याद आ गई

★★★★★★★

आए जो कभी तूफान जब मुश्किल में हो जान
हुज़ूर आ जाएंगे
जिन पर है यह जां कुरबान वह नबियों के सुल्तान
हुज़ूर आ जाएंगे

जब आफ़त कोई आएगी तसकीन दिलाने आएंगे
ईमान है कामिल यह अपना सरकार बचाने आएंगे
हम सबका है ईमान होगा फज़्ले रहमान
हुज़ूर आ जाएंगे

जब पत्थर रब बन जाएंगे जब ज़ुल्म के शोले बरसेंगे
जब शाही होगी बातिल की हक़दार कभी जब तरसेंगे
गमगीं होगा शैतान जब ले कर के कुरआन
हुज़ूर आ जाएंगे

वह आज भी ज़िन्दा हैं मुन्किर हर वक़्त करम फरमाते हैं
मीलाद मनाते हैं जब हम सरकारे मदीना आते हैं
मुर्दा न समझना तू इस वक़्त के ऐ मरवान
हुज़ूर आ जाएंगे

सरकारे मदीना के खातिर हम आस लगाए बैठे हैं
मुश्ताके ज़ियारत हम घर पर उम्मीद सजाए बैठे हैं
दिल में है एक तूफान आहट पे धरे हैं कान
हुज़ूर आ जाएंगे

माहौले क़यामत जब लोगो उम्मत को ख़ौफ़ दिलाएंगे
सर तक होगा पानी तो कभी सूरज सर पर आ जाएगा
तब उम्मत के बन कर वह बख़्शिश के सामां
हुज़ूर आ जाएंगे

डरना न मुसीबत से ग़म से तकलीफ़ से तुम मत घबराना
इस तरह तसल्ली दे देना दिल को यही कह के बहलाना
दुनिया की मुसीबत से होना न शजर हैरान
हुज़ूर आ जाएंगे

चल मदीने चल

इश्क़े नबी का आँख में भर के तू नूरी काजल
चल मदीने चल चल मदीने चल
दर पे पहुंच के प्यारे नबी के तुम बा चश्मे नम कहना
उस दरबारे आली में इक रोज़ तो पहुंचे हम कहना
उनसे कहना हमको बुला लें आज नहीं तो कल
चल मदीने चल चल मदीने चल
उनकी ज़ियारत को जब कोई शख़्स मदीने जाता है
आँख मेरी भर आती है और हिज्र में दिल घबराता है
हिज्रे नबी में भर जाती है आँखों की छागल
चल मदीने चल चल मदीने चल

शाफ़ऐ महशर मालिके कौसर शाहे उमम का दर देखो
जाओ जाकर नूरे मुजस्सम दाफ़ए गम का दर देखो
उनके दर पे मिल जाता है हर मुश्किल का हल
चल मदीने चल चल मदीने चल
जन्नत की हरयाली है या उनका गुम्बदे खिज़रा है
रश्के जिनां वह धरती है जिस जा पर उनका रौज़ा है
और मीनारे खिज़रा है या नूर की इक मशअल
चल मदीने चल चल मदीने चल
काश मेरा रब फ़ज़्ल करे ऐ काश मैं ऐसा हो जाऊं
जैसी है बे जिस्म हवा अल्लाह मैं वैसा हो जाऊं
उड़ के मदीने जाऊं जैसे जाता है बादल
चल मदीने चल चल मदीने चल

कभी गुम्बद को देखेंगे कभी मीनार देखेंगे
यक़ीनन इक न इक दिन हम दरे सरकार देखेंगे
सरापा नूर हैं जो उनका जब दरबार देखेंगे
बरसते हर तरफ हम रहमतो अनवार देखेंगे
कहा यह मौत से आशिक़ ने सरकारे दो आलम के
चलो मर कर के मर्क़द में जमाले यार देखेंगे
मुझे सरकार की शाने करीमी पर भरोसा है
मेरे हर गम मेरे हर दुख मेरे सरकार देखेंगे

मेरे हर लफ़्ज में इश्के रसूले पाक पिन्हा है
सुनेंगे वह मेरी नातें मेरे अशआर देखेंगे
फरिश्ते फ़ख्र करते हैं परे परवाज़ पर जिनकी
शबे मेराज वह भी आपकी रफ़्तार देखेंगे
कभी भी राहे हस्ती से नहीं नहीं भटकेंगे वह जो भी
तेरी गुफ़्तार देखेंगे तेरा किरदार देखेंगे
जिन्होंने रू ए अनवर आपका देखा हो आँखों से
शजर क्यों कर भला वह मिस्र का बाज़ार देखेंगे

काश उनके गुम्बदो मीनार के साए तले
नात लिक्खूं रौज़ा ए सरकार के साए तले
इल्म हक़ की रोशनी सारे जहां में छा गई
सूरए इक़रा जो आई गार के साए तले
अर्श है कुर्सी क़लम है जन्नतुल फिरदौस है
गुम्बदे खिज़रा तेरे मीनार के साए तले
दीं के ख़ातिर मेरे आक़ा के सहाबा जी गए
तीर के साए तले तलवार के साए तले
फ़िस्क़ के सूरज की गर्मी से न झुलसा दीने हक़
बढ़ गया शब्बीर के ईसार के साए तले
पांव की जंजीरों की कड़ियां हमें बतलाती हैं
सिलसिले हैं आबिदे बीमार के साए तले

खिल रहे हैं आपके सदक़े में ख़ुशियों के चमन
मेरे आक़ा आपके ईसार के साए तले
ऐ शजर हस्सान का सदक़ा तुझे भी मिल गया
ख़ुल्द पहुंचा नातिया अशआर के साए तले

★★★★★★★

हैं दर्द के मारे दरिया के किनारे
ज़ोहरा के दुलारे दरिया के किनारे
अब्बास ही बस थे जैनब का सहारा
अब किसको पुकारे दरिया के किनारे
आकाश है सहमा धरती भी है लरज़ां
सूने हैं नज़ारे दरिया के किनारे
हैंवारिसेकौसरऔर मालिके जमजम
प्यासे हैं वह सारे दरिया के किनारे
बोली यह सकीना बाबा मुझे छोड़ा
अब किस के सहारे दरिया के किनारे
यह औनो मुहम्मद गिरते हैं फरस से
या दीं के मनारे दरिया के किनारे
आजाओफरिशतो सबकरलोतिलावत
कुरआं के हैं पारे दरिया के किनारे
तिश्ना अली ज़ादे और धूप की शिद्दत
भड़के हैं शरारे दरिया के किनारे
यह रब का करम है कर्बल में शजर ने
कुछ दिन हैं गुज़ारे दरिया के किनारे

★★★★★★★

तस्वीर शहे दी है जो बार ताज़िये में
शब्बीर के बिखरे हैं अनवार ताज़िये में
ख़्वाजा से कोई पूछे वारिस से कोई जाने
शब्बीर का होता है दीदार ताज़िये में
अब्बास के बाज़ू हैं अकबर का भी लाशा है
देखे तो कोई दिल से इक बार ताज़िये में
शब्बीर की कुर्बानी यह याद दिलाता है
आक़ा का झलकता है ईसार ताज़िये में
हां इस लिए जाते हैं हम उसकी ज़ियारत को
खुलते हैं शहादत के असरार ताज़िये में
शब्बीर के सदक़े में अल्लाह शिफ़ा देगा
जा जाकर लग जा ऐ बीमार ताज़िये में

कर्बो बला का देखिए मन्ज़र लहू लहू
अकबर लहू लहू कहीं असगर लहू लहू
हो जाता दीने हक़ का मुक़द्दर लहू लहू
होते न अगर सिब्ते पयम्बर लहू लहू
भर कर के रंग दीने रिसालत मुआब में
हैं गुलशन अली के गुल तर लहू लहू
गिरते हुए सम्भाली जो नाशे शहे हुसैन
जिब्रील के भी हो गए शहपर लहू लहू
बहता है ख़ूने वारिस कौसर लबे फुरात
होती है चश्मे साक़िये कौसर लहू लहू

★★★★★★★

जैनब ने दुखड़ा जो सुनाया — हाय यज़ीदी लशकर आया
दिल है सकीना का थर्राया — हाय यज़ीदी लशकर आया
शर्म से सूरज भी छिपता है — सर से छीनी जैनब की रिदा है
बालों से चेहरा है छुपाया — हाय यज़ीदी लशकर आया
तुझ को सुकूं मिल पाया न पल भर — हाय सकीना बादे अकबर
जैसे उठा बाबा का साया — हाय यज़ीदी लशकर आया
बालियां छीनीं छीनीं रिदाएं — टूट पड़ीं यह कैसी बलाएं
खेमों को आकर है जलाया — हाय यज़ीदी लशकर आया
प्यास से बेकल बाली सकीना — किस का रस्ता देख रही हो
पानी ले कर कोई न आया — हाय यज़ीदी लशकर आया
आबिद मुज़तर की गर्दन को — शिम्र की नज़रें घूर रही हैं
ख़तरे में है अब शह का जाया — हाय यज़ीदी लशकर आया
आया कहां ले कर है मुक़द्दर — किस को पुकारे आले पयम्बर
तंग है धर्ती देस पराया — हाय यज़ीदी लशकर आया
असग़र, अकबर, औनो मुहम्मद — क़ासिम और अब्बास दिलावर
शह ने शजर घर बार लुटाया — हाय यज़ीदी लशकर आया

क़ीमत 30/-

LOVE YOU RASOOLULLAH LOVE YOU RASOOLULLAH
WE ARE YOUR SLAVES OUR LIFE IS
FORYOURYOURASOOLULLAHLOVEYOURASOOLULLAH
YOU ARE THE KING OF THE OCIAN
YOU ARE THE SAVOUR OF CREATION
EVERY THING OF THIS WORLD DEPENDING
ON YOU RASOOLULLAH LOVE YOU RASOOLULLAH
पावन पावन आक़ा तुम्हारी काया
दो जग मा है तुम्हारी नूरी छाया
मन भावन हैं तुम्हारी अँखिया मन मोहन मुखड़ा
LOVE YOU RASOOLULLAH
MOON SUN STARS SKY AND EARTH
LORD HAVE MADE EVERYTHING
FOR YOUR BIRTH
LORD MADE THIS WORLD ONLY FOR YOU
RASOOLULLAH LOVE YOU RASOOLULLAH
YOUR FACE IS VERY SWEET AND VERY BRIGHT
BLACK BLACK YOUR HAIR LIKE A DARK NIGHT
ALLAH HAS CREATED YOU AS WANTED
YOU RASOOLULLAH LOVE YOU RASOOLULLAH
काश खिले ये मेरे मन का मधुबन
हो जाए जो तैबा का दर्शन
दीन दयालू मेहर करो अय दो जहां के दाता
انی مجبورٌ انی فقیر انت آقا سیدی امیرٌ
انی غلامک یا سیدی وانت مولیٰ
WHEN YOU CAME CAME PEACE AND FREEDOM
YOU MADE A PEACEFULL LOVELY KINGDOM
PEACEINCEREMONYCITUATEDFROMYOURASOOLULLAH
ऐ आक़ा है बस यह तमन्ना मेरी
पढ़ता रहूं मैं नात हमेशा तेरी
मरते दम हो लब पे शजर के नात तेरी आक़ा
LOVE YOU RASOOLULLAH

दम मदार बेड़ा पार

मज़ारे मुक़द्दस हज़रत सैय्यद बदीउद्दीन अहमद
कुत्बुल मदार ज़िन्दाशाह मदार रज़ी.

E-mail : dummadar@yahoo.com

syedshajeralifacebook • www.youtube/syedshajarali
www.zindashahmadar.org • www.qutbulmadar.org
www.shahmadar.blogspot.com • syedshajermadari@gail.com

SMS GROUP - JOIN (Space) ALMADAR - Sent : To 567678

Almadar Offset (Insha Printers) Kanpur - 9616584408